तृतीय अध्याय

तृतीय अध्याय
"विवेच्य कहानियों में प्रतिबिंबित नारी जीवन : तुलनात्मक अनुशीलन।"

3. नारी जीवन :

भारतीय संस्कृति में नारी का स्थान महत्वपूर्ण है। मनुष्य का जीवन नारी के बिना अपूर्ण है। प्राचीन काल में नारी को गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त था। अपनी विविध भूमिकाओं द्वारा वह पुरुष का जीवन सुंदर बनाती है। वह समाज में कभी जन्मदात्री, पोषणकर्ती माता के रुप में तो कभी पुरुष के लिए प्रेरणा त्याग और सेवा का प्रतीक बनकर आती है। सृष्टि के विकास में नारी का स्थान महत्वपूर्ण है। तभी तो भारतवासियों के सब आदर्श स्त्री रुप में पाए जाते हैं। विद्या का आदर्श सरस्वती में, धन का लक्ष्मी में, पराक्रन का दूर्गा में, पवित्रता का गंगा आदि में माना गया है। यहाँ तक की देवताओं के नाम भी नारी महत्व की ओर संकेत करने में स्त्री का कार्य अधिक महत्वपूर्ण होता है। वह परिवार को बनाती भी है और बिगड़ती भी हैं।

आधुनिक युग में नारी को अपना अलग व्यक्तित्व अवश्य प्राप्त हुआ फिर भी उसे व्यक्तित्व निर्माण के लिए संघर्ष करना पड़ा इस प्रकार संघर्ष में अनेक समाज सुधारकों का सहयोग रहा। भारतीय नारी अपने हृदय में स्थित त्याग, दया, क्षमा, कोमलता, भावुकता, सहनशीलता, उदारता, मेहनती प्रवृत्ति के कारण अपने जीवन में हो रही अपनी उपेक्षा, शोषण, अपमान को सहते हुए अंत तक स्नेह वर्षा करती हुई अपना जीवन बिताती हैं।

नारी को शक्तिदायिनी माना जाता है। वह पुरुष से अधिक समर्थ होती है। वह बिना किसी सुरक्षा के अपनी भीतरी शक्ती के कारण किसी भी तरह अपना जीवन बिता सकती है। परिवार में पुरुष के न रहने पर वह बच्चों का पालन पोषण कर सकती है, उन्हे समाज का सभ्य नागरिक बनाते हुए अपने पैरों पर खड़ा रहना सिखाती हैं। नारी शिक्षा ने नारी जीवन को एक आदर्श और उँचा स्थान प्राप्त करने में मद्द की हैं। आधुनिक युग में नारी धीरे - धीरे हर क्षेत्र में अपनी एक अलग पहचान बना रही हैं। वह पुरुष के साथ सहयोगी, सहचरी के रुप में हर कार्य में आगे बढ रही है और अपने एक प्रगत जीवन का परिचय करा रही है। नारी परिवार तथा समाज में विविध अंगो से अपना जीवन विकसित कर रही है। जैसे - नारी अपने जीवन में बौद्धिकता के सहारे एक प्रतिष्ठित तथा सम्मानित पद हासिल करती हुई परिवार तथा समाज के सामने एक

आदर्श प्रस्थापित करती है। परिवार में वह एक सुसंस्कारित तथा सुशील पुत्री तथा माता का जीवन बिताती है। जो अपने साथ परिवार का भी विकास करती है। समाज में वह हर क्षेत्र में अपने पद पर स्थानापन्न होकर कार्य करती है। नारी को पुरुष से मेहनती और ईमानदार माना जाता है। नारी कोई भी कार्य लगन या एकाग्रभाव से करती है। वर्तमान युग में नारी के स्वावलंबी जीवन को ही नारी मुक्ति की दृष्टि से महत्त्व दिया जाता है, ''यदि उनके जन्म के साथ विवाह की चिंता न कर उनके विकास के साधनों की चिंता की जाए, उनके लिए रुचि के अनुसार कला तथा शिक्षा तथा उद्योग - धन्धों द्वार खुले हो, जो उन्हें स्वावलंबिनी बना सके और तब अपनी शक्ति और इच्छा को समझकर यदि वे जीवनसंगी चुन सके तो विवाह उनके लिए तीर्थ होगा, जहाँ वे अपनी संकीर्णता मिटा सकेंगी, व्यक्तिगत स्वार्थ को वह बहा सकेंगी और उनका जीवन उज्वल से उज्जवलतर हो सकेगा।[1]

नारी समाज, मनुष्य के साथ साहित्य की भी प्रेरक तत्त्व रही है। जिस प्रकार नारी के बिना पुरुष तथा समाज अधूरा है उसी प्रकार साहित्य भी अधूरा हैं। नारी हमेशा नवनिर्माण के लिए प्रेरणा के रुप में प्रस्तुत हुई है। समाज, परिवार, क्षेत्र की तरह साहित्य में भी नारी का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। प्रत्येक भाषा के साहित्य में उसका वर्णन मिलता हैं। आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक नारी को लेकर अनेकानेक रचनाएँ लिखी गई हैं। लेकिन आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक नारी की ओर देखने का दृष्टिकोण समय के अनुसार बदलता रहा हैं।

आधुनिक युग में आर्थिक विषमता, मध्यवर्ग की स्थिति, वैवाहिक, पारिवारिक, सामाजिक रुढिवादिता आदि का गहरा परिणाम नारी - जीवन को हीन बना रहा है। ''यह निर्विवाद सत्य है कि नारी - हृदय के प्रेम और व्यथा की कहानी, जितनी सरसता और आकर्षण के साथ नारी लिख सकती है उतनी पुरुष नहीं। नारी स्वयं नारी है, वह नारी के हृदय में प्रवेश करके नारी को पढती है, तभी वह नारी स्वभाव का इतना सजीव चित्र प्रस्तुत करने की क्षमता रखती है।''[2]

पद्माशा जी तथा सानिया जी भी ऐसी ही लेखिकाएँ हैं, जिन्होंने अपनी कहानियों मे नारी जीवन पर प्रकाश डालकर उसे चित्रित किया है।उनके कहानियों के अध्ययन के पश्चात निम्नलिखित नारी जीवन दिखाई देता है।

---

1. महादेवी वर्मा, शृंखला की कड़ियाँ, पृ. क्र. - 84
2. डॉ. ज्योत्स्ना शर्मा, शिवानी का हिंदी साहित्य सामाजिक परिप्रेक्ष्य में पृ. -14

3.1 नारी का दांपत्य जीवन :

पारिवारिक जीवन का मूलाधार दांपत्य जीवन है। नारी और पुरुष का विवाह परिवार की आधारशिला है। विवाहित जीवन का तात्पर्य पति-पत्नी दोनों एक दूसरे को समझे और प्यार करें। दांपत्य जीवन का सुख और संतोष पति - पत्नी की पारस्पारिक एकनिष्ठा में निहित है। पति - पत्नी के नित्य कलह से कई समस्याओं का जन्म होता है। दांपत्य जीवन की कटुता संपूर्ण जीवन को दु:खमय बना देती है। ''दांप्त्य जीवन का अपना सुख है जो अमिट है, असीम है।''[1]

पारस्पारिक सौहार्द, यौन तृप्ति, परस्पर सम्मान की भावना, पारस्पारिक विश्वास, सहानुभूति और समानधार्मिता, तन के साथ मन का सामंजस्य दांपत्य जीवन के महत्त्वपूर्ण तत्व है , जिनके ऊपर दांपत्य जीवन टिका होता है। व्यक्ती के जीवन में दांपत्य जीवन महत्त्वपूर्ण है। मधुर दांपत्य जीवन के लिए पति - पत्नी की प्रकृति और आपसी समझबुझ की आवश्यकता होती है। यही कारण है कि गैरकामकाजी तथा अशिक्षित, आत्मनिर्भर नारी भरकस प्रयास करने पर भी सुखी दांपत्य जीवन का भोग नहीं कर पाती। अत: निसंदेह यह कह सकते हैं कि शिक्षा तथा धन से सूखी दांपत्य जीवन नहीं बिता सकते, सुखी दांपत्य जीवन के लिए आपसी समझ - बूझ की आवश्यकता है। पद्‌माशा और सानिया ने अपने कहानियों में दांपत्य जीवन का चित्रण किया है। वे निम्नलिखित दिखाई देता हैं -

3.1.1. सफल दांपत्य जीवन :

सफल दांपत्य जीवन के लिए अर्थ, काम और धर्म तीनों में समन्वय चाहिए। इन तीनों का दांपत्य जीवन में समन्वय तभी संभव है, जब पति, पत्नी एक दुसरे भी इच्छानुसार चलें। ''सूखी दांपत्य के लिए आमदनी, शिक्षा, नोकरी, घरेलू उत्तर दायित्व, संयुक्त परिवार की अपेक्षा, पति - पत्नी का एक दुसरे के प्रति उदार दृष्टिकोण का होना अत्यधिक आवश्यक है।''[2]

सफल दांपत्य जीवन के लिए परस्पर प्रेम, त्याग, सामंजस्य, समायोजना आदि का होना अनिवार्य है। पद्‌माशा तथा सानिया की कहानियों में सफल दांपत्य संबंधों का चित्रण दिखाई देता हैं।

---

1. डॉ. शीलप्रभा वर्मा, महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में बदलते सामाजिक संदर्भ, पृ. -12
2. डॉ. धनराज मानधाने, कामकाजी नारी : मानवीय संबंधों का विघटन, पृ. -48

पद्माशा की 'रोज - रोज' की सुरजी और उसका पति मजदूरी करते हैं। लेकिन दोनों में सामंजस्य दिखाई देता है। दोनों को काफी तकलीफ सहनी पड़ती हैं। मगर वह सहजता से सहते है। एक वक्त की रोटी नसीब में नहीं होती लेकीन दोनों खुद भुखा रहकर बच्चों को पेटभर खाना खिलाने का प्रयास करते हैं। दोनों का दांपत्य जीवन यहाँ सफल दांपत्य जीवन के रुप में चित्रित होता है।

'पीली काली गुलाब की' की मालिनी का पति विवेक भारतीय दूतावास में एक उच्च अधिकारी के रुप में विदेश में रहता है। उसके दोनों बच्चें होस्टल में अच्छी पढाई के लिए रहते है। मालिनी खुद अकेली रहती है। फिर भी उनका दांपत्य जीवन सफल दिखाई देता है। क्योंकि, मालिनी ने गुलाब की बाग की तरह परिवार रुपी बगिचें को सींचा था। खुद अकेली रहकर भी पति और बच्चों के सुविधानुसार अपने आप को बदला था।इसी तरह मालिनी का दांपत्य जीवन सफल चित्रित हुआ है।

'खानाबदोश रिश्ते' की सुजाता एक पत्रकार थी । उसका कैरियर एक उंचाई पर था फिर भी वह भुवन के प्यार में अंधी होती है लेकिन दोनों में वैचारिक मतभेद होणे के कारण शादी के सात साल बाद वह भुवन के स्वभाव से तंग आकर मायके चली आती है। फिर जब भुवन उसे फोन करता है, और हक से वापस आने के लिए कहता है तो वह यह सोचती है कि, -" जीवन का एक हिस्सा तोड़कर दुसरा हिस्सा संवारने में भला क्या औचित्य है।वह अँधेरा भी उसका अपना है, यह रोशनी भी उसकी अपनी होगी।"[1] इस प्रकार समझदारी से सुजाता वापस भुवन के पास आती है।

'अनुपमा' की शैलजादेवी जो अनुपमा की माँ है वह खुद एक समाज सेविका है।जों कई संस्थानों से जुडी हुई है और उनके पति श्री. जमुना प्रसाद सिंह, सिंचाई विभाग में इंजिनियर पद पर काम कर रहे हैं। उनको एक बेटी और दो बेटे हैं। जो तीनों स्वभाव से अच्छे और मेधावी है।इन तीनों में आपसी प्रेम, सामंजस्य दिखाई देता हैं।जब अनुपमा की शादी की तैयारी बहुत जोर से शैलजादेवी कर रही थी तब जमुनाप्रसाद उसे बार - बार टोकते "क्यों जान देने पर तुली हुई हो शैल - कुछ काम दूसरों को भी दे दो, मेरे दफ्तर के स्टाफ सारा काम आनन फानन में कर देंगे।"[2]

---

1. डॉ. पद्माशा झा, छोटे शहर की शकुन्तला, पृ. -58
2. वही, पृ. - 69

सानिया की 'स्पर्श' की सुचित्रा जीवन भर सिर्फ अपने पति और बच्चों की सुविधानुसार ही अपने जीवन को चलाती रही। कभी भी उसने किसी भी चिज की अपेक्षा नहीं की और ना ही कोई उसके तकलिफों को हर सुख-दु:ख में साथ दिया था। यहाँ सुचित्रा के दांपत्य जीवन से उसका दांपत्य जीवन सफल दिखाई देता है।

'क्षितिज' की यशोधरा पढ़ने के लिए परदेस जाती है और वही एक अमेरिकन ख्रिश्चन लड़के के साथ शादी करके वही रहती है। यह बात उसके माता - पिता स्वीकार नहीं करतें। वह आठ साल बाद अपने माता - पिता से मिलने उसका पति केविन के साथ आती है। तो उसके पिता उससे सिधे बात नहीं करतें। फिर भी वह रहती है, पति की सबके साथ पहचान कराती है। जब केविन घुमने के लिए अकेला जाना चाहता है, तो यशो के पिता क्रोधित होते है, और उसे भी जाने के लिए कहते है। केविन यशो की भाषा नहीं जानता था, लेकिन घरवालों के बर्ताव से यशो को घुमने के लिए नहीं कहनेवाला केविन चलणे के लिए कहता है - " माझ्या बरोबर जमेल तितकं राहा. नाही वाटलं तर लगेच परत जा इथे नाही आपल्या घरी "[1] (मेरे साथ जितना हो सके उतना रहो। अच्छा नहीं लगा तो जल्दी वापस जावों, इधर नहीं अपने घर।") इस तरह अभाषिक होने पर भी अपने पत्नी के दिल की हालत समझकर केविन हालात से समझौता करता है। इससे इनका जीवन सफल दांपत्य जीवन के रुप में चित्रित हैं।

'एक पाऊल पुढे' की उर्मिला एक इंजिनियर थी। वह विश्वास के फर्म में नौकरी के लिए जाती है , और उसीसे शादी करती है। उसे एक बेटा है 'आलोक'। आलोक की पत्नी प्राची भी आर्किटेक्ट है। उर्मिला ने अपने परिवार के लिए अपना करिअर छोड़ा था और परिवार सँभाल रही थी। लेकिन जब विश्वास का कारोभार घाटे में आ गया तब वही प्राची द्वारा दिया गया काम करने लगी।वह विश्वास को तकलीफ नें नहीं देख सकती थी।इस तरह उर्मिला का दांपत्य जीवन सफल दांपत्य जीवन दिखाई देता है।

'स्वरुप' की रेवती प्लॅनिंग ऑफिसर थी।उसने बड़ी मेहनत से यह पद हास्लि किया था। वह बहुत ही होशियार, महत्वकांक्षी थी। जिंदगी जिने के उसके अलग अंदाज थे और वैसे ही उसे समझलेने वाला तथा उसकी हर बात को समझदारी से माननेवाला पति उसे निरंजन के रुप में मिलता है। वह पुरुषों से भी आगे थी इसी बात के कारण ही माँ बनना उसे पसंद नहीं था। फिर

1. सानिया, क्षितीज, पृ. -56

भी निरंजन कभी जिद नहीं करता है। लेकिन रेवती के पिता की जिद के कारण वह उन्हें एक नन्हीं बच्ची देना चाहती है, और गर्भवती होती है। लेकिन गर्भवती होनेपर भी वह वैसे ही काम करती रहती है जैसे पहले करती थी। इसी कारण उसका गर्भपात होता है। दोनों भी अपने जीवन में एक दुसरे से बहुत खुश है। इस तरह के चित्रण दुवारा रेवती का सफल दांपत्य जीवन दर्शीत है। 'परिघाबाहेर' की इरा नोकरी करती है।उसका पति जनार्दन का कारोबार है। इरा को भी एक बेटी और एक बेटा है। उसने दोनों बच्चों को स्वतंत्र और जबाबदार बनाया था। उस्ने पति को हर सुख-दु:ख में साथ दिया था।हर वक्त उन्हींके सुविधानुसार सोचा था। अपने करिअर को भी पति के कारोबार के कारण अलग रखा था। जब उसका प्रमोशन पर तबादला होता है तो जनार्दन भी समझ लेता है और खुद अकेला रहने के लिए तैयार होता है। इस तरह का त्याग इनके जीवन में एक दुसरे के लिए दिखाई देता है। इससे इनका दांपत्य जीवन सफल दिखाई देता है।

'आकार' की रेणु और अजय दोनों विदेश में रहते थे। दस साल के वास्तव्य के बाद अजय विदेश से भारत आना चाहता था, तो इसका रेणु विरोध नहीं करती। अजय ने यहाँ आकर अपना छोटा कारोबार शुरु किया। वह बाहर के काम देखता था और रेणु ऑफिस को सँभालती थी। उनको दो बच्चें है जो छोटे हैं। रेणु और अजय एक दुसरे को हर स्थिति में साथ देते हैं, जिस कारण उनका परिवार और कारोबार भी सफलता की ओर चल रहा था। इसी चित्रण से उनका दांपत्य जीवन सफल साबित होता हैं।

ऐसा चित्रण सानिया की कहानियों में दिखाई देता हैं।

समन्वित तुलनात्मक अनुशीलन :

विवेच्य कहानीकारों की कहानियों के अध्ययन के पश्चात् यह दिखाई देता है कि, दोनों की कहानियों में सफल दांपत्य जीवन का चित्रण हुआ है। पद्माशा तथा सानिया दोनो की कहानियों की नारी अपने परिवार की सफलता के लिए अपना करिअर छोड़ते दिखाई देती है। पति भी अपनी पत्नी की सफलता के लिए समझौता करते हुए चित्रित होते हैं।

पद्माशा की कहानियों में सफल दांपत्य जीवन का चित्रण अत्यल्प मात्रा में दिखाई देता है। सानिया के कहानियों में पर्याप्त मात्रा में दिखाई देता है।

---

1. सानिया, परिमाण, पृ. -56

विवेच्य कहानीकारों की कहानियों में सफल दांपत्य जीवन का अध्ययन करने के पश्चात जो साम्य - वैषम्य परिलक्षित होते हैं, वे इस प्रकार हैं -

साम्य :

1. पद्‌माशा तथा सानिया की कहानियों में सफल दांपत्य जीवन का चित्रण दिखाई देता हैं।
2. दोनों की कहानियों में पति, पत्नी में समझौता, आपसी प्रेमभाव, एक दुसरे के प्रति आदरभाव चित्रित होते हैं।
3. दोनों की कहानियों में एक दुसरे के लिए त्याग दर्शीत होता हैं।
4. दोनों की कहानियों में नारी अपने परिवार की सफलता के लिए करिअर को छोड़ती चित्रित होती हैं।

वैषम्य :

1. पद्‌माशा की कहानियों में सफल दांपत्य का चित्रण अत्यल्प मात्रा में दिखाई देता है।
 - सानिया की कहानियों में पर्याप्त चित्रण दर्शित होता हैं।
2. सानिया की कहानियों की नारी पति के लिए माता -पिता का त्याग करती चित्रित होती है।
 - पद्‌माशा की कहानियों में ऐसा चित्रण ही नहीं हैं।

3.1.2 असफल दांपत्य जीवन :

पति - पत्नी के बीच तनाव, वैचारिक संघर्ष, त्याग और समर्पण का अभाव दांपत्य संबंधों को असफलता की ओर ले जाता है। साथ ही - ''दांपत्य जीवन की असफलता के पीछे पति - पत्नी के अहं की टकराहट या कही आर्थिक स्थितियाँ, आपसी अविश्वास, आपसी संदेह जैसे अनेक कारण होते हैं।''[1] परिणाम स्वरुप दांपत्य संबंध आरंभ में तनावग्रस्त और तत्पश्चात असफल बन जाते हैं। वर्तमान युग में शिक्षा के कारण नारी पति के पैरों के निशानों पर न चल पति के निर्णयों को चुनौती दे रही है। जिससे पति के अहं को ठेंस पहुँचती है। कटूता और संघर्ष बदलता है , जिसकी परिणती में दांपत्य संबंध असफल होते है। पद्‌माशा तथा सानिया की कहानियों मे असफल दांपत्य संबंधों का चित्रण मिलता हैं।

1. डॉ. के. एम्. मालती, साठोत्तर हिंदी कहानी में संवेदना का बदलता स्वरुप, पृ. -106

पद्माशा के 'बर्फ' की दीपा एक लेक्चरर है। उसने देवेन के साथ घरवालों के विरोध के बावजूद शादी की थी। लेकिन देवेन उसे और बच्चें को छोड़कर दिल्ली चला जाता है , क्योंकि शादी जैसे बंधन से वह मुक्ति पाना चाहता था। दीपा ने कितना चाहा लेकिन देवेन नही माना। इसी कारण दीपा और देवेन का दांपत्य जीवन असफल हो जाता है। ऐसा चित्रित है।

'चांद पीला क्यों है?' की मोहिनी पढ़ी लिखी लडकी है।उसकी शादी साँवली होने के कारण बहुत दिनों तक नहीं होती। बाद में जी. जे नामक सुंदर आदमी से उसकी शादी होती है। जी. जे ने महज उससे इसीलिए शादी की थी कि, उसका आर्थिक स्तर बढ़ाने के लिए उसे एम. ए. पास लड़की उसे चाहिए थी। जी. जे. का किसी शालिनी नाम की औरत के साथ भी संबंध था। इस कारण मोहिनी मन से दुःखी होती हैं , इससे मोहिनी का दांपत्य जीवन एक साथ रहकर भी असफल हो जाता है।

'उदास गजल सी एक शाम' की रानी विरेश से प्यार करती थी। दोनों भागकर शादी भी करना चाहते थे, लेकिन ऐन वक्त पर विरेश नहीं आता। इस सदमें से रानी पागल की तरह व्यवहार करने लगती हैं । बाद में विरेश द्वारा किए गए विश्वासघात से वह बाहर नहीं निकल पाती। हर पुरुष से वह इस बात का बदला लेना चाहती हैं । उसकी शादी एक प्रोफेसर से होती है, लेकिन उसे वह अपमानित करती हैं । जल्दी ही वे अलग होते हैं , और फिर वह दूसरी शादी करती हैं। लेकिन वह उसे भी नहीं सँभाल पाती। इस तरह सदमें में जी रही रानी का दांपत्य जीवन असफल ही हो जाता हैं।

'छोटे शहर की शकुन्तला' की सुस्मिता विनय के साथ घरवालों के विरोध करने पर भी प्रेमविवाह करती है। दोनों अच्छे पद पर नौकरी भी करते थे। शादी के बाद नए दिन अच्छे चल रहे थे कि, विनय के माता - पिता को विनय की शादी घाटे का सौदा लगने लगा, फिर विनय भी इसमें शामील हो जाता है। दोनों में झगड़ा होने पर उसका अंत तलाक से ही हो गया। आर्थिक लालच के कारण ही सुस्मिता का दांपत्य जीवन असफल हो जाता है ऐसा दर्शीत होता हैं।

'अनुपमा' की अनुपमा माता - पिता की इकलौती बेटी थी। इसकारण उसका विवाह उन्होंने बड़ी धूम-धाम से इंजिनियर लड़के संजय के साथ किया था। उसके विवाह में लड़केवालों ने जो भी मांगा वह उसके माता - पिता ने दे दिया। फिर भी लालच की कोई सिमा नहीं होती। अनुपमा के ससुराल वालों ने अपना रंग दिखाना ही शुरु किया। अनुपमा को संजय से मिलने के

UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

लिए रोका जाता है, ढ़ेर सारा काम उनके जिम्में रखा जाता और फिर बाद में उसे मौका देखकर जलाया जाता है। अनुपमा जैसी मेधावी लड़की बिना कसूर के धन के लालच की शिकार बनती है। इसतरह का असफल दांपत्य जीवन चित्रित होता है।

'गर्म बिस्तर' की नीमा का पति शराबी था। फिर भी नीमा बच्ची को देखकर उसकी मार - पीट, गाली - गलोच सह लेती है। लेकिन जब वह एक दुसरी औरत को ले आता है, तब वह उससे झगड़ा करती है, तो वह उसे ही बाहर निकाल देता है। नीमा वहाँ से एक पंडित के घर में पनाह लेती है, और उसीकी बनके रहती है। इस तरह का नीमा का दांपत्य जीवन असफल है, ऐसा यहाँ दर्शीत होता है।

सानिया की 'परिमाण' की देवकी कैलास से प्यार करती थी। लेकिन कैलास फिल्मों में काम करने के लिए भाग जाता है। उसका विवाह सुखदेव से होता हैं। लेकिन शादी के बाद देवकी कैलास से मिलती है, और दोनों के संबंध दृढ होते जाते हैं। सुखदेव को शक है कि, उसकी बेटी रितू यह कैलास की ही बेटी है। सुखदेव और देवकी साथ रहकर भी इन दोनों का दांपत्य जीवन साशंकता से, झगड़ो से भरा हैं। यहाँ दांपत्य जीवन की असफलता को दर्शाया है।

'काजवे' की अनू हेमंत से प्रेमविवाह करती है। हेमंत एक नीतिमुल्यों को भूला हुआ भ्रष्टाचारी आदमी है, ऐसा अनू का मत था। वह लोगों से पैसे लेकर ही उनके काम होने देता है। इस कारण अनू और हेमंत में विचारों की भिन्नता के कारण वह मायके चली आती है। इससे इनका दांपत्य जीवन असफल चित्रित होता है।

'काजवे' की लीला अनू के बचपन के दोस्त राघव की पत्नी है। राघव शादी नहीं करना चाहता था फिर भी माँ के जिद के कारण शादी करता है।लेकिन वह लिला से कभी बात नहीं करता था, कभी प्यार नहीं करता था और ना ही कभी झगड़ा करता है।दोनों एक साथ रहते है फिर भी इनका दांपत्य जीवन राघव के विक्षिप्त स्वभाव के कारण असफल हो गया है यह चित्रित होता है।

'चित्र' की शशी एस्बी नामक आदमी के ऑफिस में सेक्रेटरी थी। उसकी चालाकी, काम करने का अच्छा तरीका और स्वभाव की शालिनता को देखकर एस्बी ने उसे अपनी बहु बनाया। एस्बी और शशी का पति विनोद से कभी जमती नहीं थी। इसी कारण ही उन्होने शशी ही आगे अपना कारोबार चला सकेगी यह सोचकर उसे बहू बनाया था। शशी अपने कामों में व्यस्त थी,

लेकिन विनोद उसे निचा दिखाने के लिए दूसरी औरत के साथ रहता है। शशी का घर में ध्यान न होने के कारण बच्चें भी कटे सें रहते हैं। शशी ने कारोबार में अपना अलग स्थान बनाया था, लेकिन उसका दांपत्य जीवन वह सफल ना बना सकी। इस तरह उसका असफल दांपत्य जीवन दिखाई देता है।

'चित्र' की शशी सास वेणूताई और ससुर एस्बी इनका दांपत्य जीवन भी एस्बी के विक्षिप्त स्वभाव के कारण असफल था। दोनों अलग-अलग रह रहे थे। ऐसा चित्रण मिलता है।

'आकार' की सुचेता रेणु के ऑफिस में काम करती है। उसका पति विदेश में पैसे कमाने के लिए गया है। सुचेता और रवि का प्रेमविवाह था, फिर भी रवि चंचल और ऐय्याशी था। इसी कारण वह सुचेता को विदेश नहीं ले जा रहा था। सुचेता यहाँ घर का काम करके फिर ऑफिस में काम करने आती थी। रवि विदेश में और सुचेता यहाँ घर में थी। शादी का बंधन सिर्फ सुचेता निभा रही थी और रवि रोज एक नई लडकी को लेके विदेश में घुम रहा था। यह देखकर सुचेता का दांपत्य जीवन असफल दांपत्य जीवन दिखाई देता हैं।

ऐसा चित्रण सानिया की कहानियों में मिलता हैं।

समन्वित तुलनात्मक अनुशीलन :

पद्माशा तथा सानिया की कहानियों के अध्ययन के पश्चात दांपत्य जीवन का चित्रण दृष्टिगोचर होता हैं।

दोनों की कहानियों में पति द्वारा शादी जैसे बंधन को ठुकराकर हालात से भागने का चित्रण दिखाई देता हैं। दोनों की कहानियों में नारी का प्रेमविवाह होने के बावजूद भी वह असल जिंदगी में असफल दांपत्य जीवन का सामना करती चित्रित होती है। दोनों की कहानियों की नारियाँ आत्मनिर्भर दिखाई देती हैं। सानिया की कहानियों की नारी असफल दांपत्य जीवन को सहजता से स्वीकार करती दिखाई देती हैं। लेकिन पद्माशा की कहानियों की नारी परिवार के लिए दिल से कमजोर चित्रित होती है

विवेच्य कहानीकारों के कहानियों के अध्ययन के पश्चात असफल दांपत्य जीवन को लेकर जो साम्य - वैषम्य दिखाई देते हैं, वे इस प्रकार हैं -

साम्य :

1. पद्माशा और सानिया दोनों की कहानियों में असफल दांपत्य जीवन का चित्रण दिखाई देता हैं।
2. दोनों की कहानियों में नारी को शादी जैसे बंधन को ठुकराकर हालात से भागने वाले पतियों का सामना करना पड़ता हैं।
3. दोनों की कहानियों की नारियाँ विरोध के बावजूद प्रेमविवाह करके भी वास्तविक असफल दांपत्य जीवन बिताती दिखाई देती हैं।
4. दोनों की कहानियों की नारियाँ आत्मनिर्भर दिखाई देती हैं।

वैषम्य :

1. सानिया की कहानियों की नारी असफल दांपत्य जीवन का सहजता से स्वीकार करती दिखाई देती है।

- पद्माशा की कहानियों की नारी दिल से कमजोर दिखाई देती है।

3.2 नारी का पारिवारीक जीवन :

विश्व के प्रत्येक समाज में और सभी युगों मे किसी न किसी रुप में परिवार अवश्य दिखाई देता हैं। परिवार समाज की मूलभूत ईकाई है। परिवार का केंद्रबिंदू व्यक्ति है। समाज - व्यक्ति और परिवार एक - दूसरे के पूरक होते हैं। परिवार को छोड़कर व्यक्ति नहीं रह सकता और परिवारों के बगैर समाज नहीं बन सकता। इस बारे में प्रसिद्ध समाजशास्त्री राम बिहारी तोमर ने लिखा है - ''परिवार एक मौलिक सामाजिक संस्था है।यह अदिकाल से चला आ रहा है। यह समाज की प्रथम इकाई भी है और सबसे घनिष्ठ सामाजिक समूह भी।''[1]

पारिवारिक जीवन में परिवार में सम्मिलित सदस्यों का आपसी मेल - जोल या परस्पर - व्यवहार का विचार किया जाता है। नारी का पारिवारिक जीवन कभी सुख तो कभी दुख से भरा होता है। परिवार के लिए नारी जैसे स्वयं को समर्पित करती है और इसी कारण कभी - कभी परिस्थितिवश उसे परिवारवालों से घृणा तथा नफरती व्यवहार को सहन करना पड़ता है, जैसे परिवारवाले उसका शोषण कर रहे हो।ऐसे घृणित व्यवहार से शोषित तथा पीड़ित नारी अपना

1. रामबिहारी सिंह तोमर, हिंदू विवाह एवं परिवार की समस्याएँ, पृ. -148

जीवन बिताती है। किंतु कहीं - कहीं नारी अपने परिवार वालों के दुर्व्यवहार से संतप्त होकर कर्मठ तथा कठोर जीवन बिताती है और दूसरों के साथ भी कठोरता से व्यवहार करती है।

पद्माशा और सानिया की कहानियों में भी नारी के पारिवारिक जीवन को दर्शाया है, वे इस प्रकार हैं -

3.2.1 शोषित तथा पिड़ित नारी :

नारी का शोषित रुप अधिकतर सभी जगह दिखाई देता है। चाहे वह कौन - सा भी युग हो, क्षेत्र हो या वर्ग हो उसका शोषण होता आया है। अनेकों ने नारी पर होनेवाले अत्याचार का विरोध किया नारी की इस स्थिति के लिए कभी - कभी नारी ही जिम्मेंदार होती है। नारी ही नारी का शोषण करती है। नारी भी स्वयं इसके लिए कम दोषी नहीं है। चार दिवारों में रहकर भी नारी, नारी का शोषण करती है। कभी - कभी मजबूरी अथवा परिस्थिति के कारण उसे परिवारवालों की घृणा तथा तिरस्कृत व्यवहार को सहना पड़ता है। असहायता और संस्कारित होने के कारण वह परिवारवालों से अलग हो सकती है बल्कि उनके विरोध के कारण उसका जीवन और भी शोषित तथा पीड़ित बन जाता है। पद्माशा तथा सानिया की कहानियों में शोषित तथा पीड़ित नारी का चित्रण दिखाई देता है।

पद्माशा की 'बर्फ' की दीपा का पति उसे और नन्हें बच्चें को छोड़कर विवाह जैसे बंधन से मुक्ति पाने के लिए दिल्ली चला जाता है, और बीच - बीच में वापस आता है। इस दौरान दीपा का कुणाल के साथ रिश्ता बनता है और वह भी बार - बार उसे उसका खयाल पुछने के लिए फोन करते रहते हैं। देवेन जब आता है, तो कुणाल का बार - बार फोन आता देख दीपा पर गुस्सा करता है। लेकिन इतने दिनों में वह कभी नहीं सोचता कि, दीपा कैसी है? या फिर बच्चें के बारे में कभी पुछा हो। इसपर दीपा चुपचाप बैठ जाती है।वह कुछ नहीं कह पाती। असहाय दीपा अपने बच्चे के लिए पति द्वारा दिए गए शोषण और पीड़न में उसे जीवन बिताना पड़ता है।

'कहानी और रिपोर्ताज के बीच' की लीली कॉन्वेन्ट होस्टल में रहती है। एक बार उस होस्टल के ऑफिस से पंद्रह रुपयों की चोरी होती है और सुपीरियर सब बच्चों को बारी - बारी से पुछती है। लीली कुतुहल से कहती है कि, - "सिस्टर इतने पैसे में तो बहुत सारी टाफियाँ आयेंगी, बहुत रिबन और गुब्बारे ...... इतना...इतना।"[1] छोटी छोटी बाहें फैलाकर वह सिस्टर से पुछती

1. डॉ. पद्माशा झा, कहानी और रिपोर्ताज के बीच, पृ. -18

है। तो सिस्टर उसी को दोषी मानकर चॉकलेट का लालच दिखाकर चोरी लिली ने ही की है ऐसा उससे कहलवाती है। लीला को बच्चों के सामने न किए गए अपराध के लिए बेंते पड़ती है और पापा से भी मार खाना पड़ता है। इस तरह लीला शोषित तथा पिड़ित जीवन बिताती है , यह दिखाई देता है।

'चांद पीला क्यों है?' की मोहिनी जैसे ही बढ़ी होने लगती है वैसे ही उसपर पाबंदियाँ लगने लगती हैं। वह कभी बाजार में अकेली नहीं गई। या फिर कॉलेज में जाते वक्त सहेली नहीं आयी तो भैय्या उसे कॉलेज पहुंचाने और लाने का काम करते थे। उसे कभी भी अकेले कोई काम करने नहीं देते थे, इससे मोहिनी बहुत ही चिढ़ती थी। बाद में उसकी शादी होती है। जी. जे उसका पति जिसका किसी शालिनी नाम के सुंदर औरत के साथ संबंध था और वह मोहिनी से महज इसलिए शादी करता है क्योंकि वह पढ़ी लिखी है। वह समाज में रहने के लिए आर्थिक स्तर बढ़ाना चाहता था और मोहिनी द्वारा वह बढ़ा सकता था। इससे मोहिनी शोषित तथा पीड़ित जीवन बिताती दिखाई देती है।

'रोज-रोज' की सुरजी एक गरीब मजदूरी करनेवाली नारी है। जो मालिक द्वारा शोषित तथा पीड़ित है। उसके पति ने गेंहू की खेती तीसरे साल बंटाई पर लिया था। सुरजी उसे अपने बच्चे की तरह सँभाल रही थी। लेकिन जैसें कोयल का बच्चा भाग जाता है और मादा कौवा सूने घोंसले की तरफ ताकती रह जाती है वैसे ही सुरजी खेत में काम करती है लेकिन अनाज रातों रात गायब हो जाता है। सुरजी और उसका परिवार एक वक्त की रोटी के लिए तड़फते रह जाते है। इस तरह सुरजी शोषित और पीड़ित जीवन बिताती है।

'खानाबदोश रिश्तें' की सुजाता एक जानी मानी पत्रकार थी। शादी नहीं करना चाहती थी। फिर भी जब भुवन उसके जिंदगी में आता है तो उसकी बातों से प्रभावित होकर वह उसको उसके बच्चों सहित अपनाती हैं। लेकिन शादी के बाद भुवन का असली स्वभाव सामने आता है। जो भुवन उसके करिअर की तारिफ करता है वही उसको बार - बार अपमानित करता है। रात को देर से शराब पीकर लौटना, इससे वह तंग थी। यहाँ सुजाता एक पत्नी के रुप में, शोषित तथा पीड़ित जीवन बिताती दिखाई देती है।

'अनुपमा' की अनुपमा अपने माता - पिता की इकलौती बेटी थी। उसकी शादी अच्छें खानदान में इंजिनियर लड़के के साथ होती है। दहेज में जितना माँगा उससे कई ज्यादा दिया

था। लेकिन सास-ससुर और ननद का लालच कम नहीं होता। वह तीनों मिलकर अनुपमा को बहुत कष्ट देते हैं। बार - बार अपमानित करते हैं। अपने पति से मिलने पर भी उसे पाबंदी होती हैं लेकिन फिर भी सब सहती है। इसी लालसा ने अनुपमा का जीवन शोषित तथा पीड़ित बनाया था।

सानिया की 'परिमाण' की रितू माता -पिता के झगड़ों के कारण पीड़ित है। माँ देवकी कैलास से प्यार करती थी। लेकिन उसकी शादी सुखदेव से होती है।फिर भी देवकी के संबंध कैलास के साथ संबंध थे। सुखदेव को शक है कि रितू कैलास की ही बेटी है।यह रितू को भी लगता है। इस आशंका के कारण रितू शोषित तथा पिड़ित जीवन बिताती दिखाई देती है।

'क्षितीज' की यशोधरा की माँ जिसे सब वहिनी (भाभी) नाम से पुकारते हैं। वहिनी की जबसे शादी हुई थी तब से उसने सबकों बिना कुछ कहें सँभाला था। वह सबसे बड़ी भाभी थी इसीकारण देवरों को उसे ही सँभालना पड़ा था। जब उसकी बेटी यशोधरा अपनी मर्जी से अंतरदेशीय विवाह करती है तब समाज से तथा यशोधरा के पिता का भी सारा गुस्सा उसे ही सहना पड़ता है और उपर से बेटी की चिंता भी उसे पीड़ित करती है। फिर भी वह सब चुपचाप सहती है। यहाँ भाभी शोषित तथा पीड़ित जीवन बिताती चित्रित होती है।

'काजवे' की लीला, अनू के बचपन के दोस्त राघव की पत्नी थी। वह बहुत ही भोली, सीधी - साधी थी। राघव शादी नहीं करना चाहता था, फिर भी माँ की जिद की वजह से उसे शादी करनी पड़ती है। लेकिन वह लीला से ना प्यार करता है, ना उससे बात करता है और ना ही उससे कभी झगड़ा करता है।इससे लीला बहुत नाराज है और नाराजी को दूर करने के लिए वह बच्चा चाहती है। लेकिन राघव उसके पास ही नहीं जाता तो बच्चा कैसे होगा। लीला कुछ नहीं कह सकती है । अपने आप अंदर ही अंदर घुटती, शोषित तथा पीड़ित जीवन बिताती दिखाई देती हैं।

'चित्र' की शशी को एस्बी ने उसकी चालाखी, होशियारी और महत्वाकांक्षा को देखकर सेक्रेटरी से बहू बनाया था। ताकि वह उसका कारोबार आगे चला सकेगी। एस्बी और शशी का पति विनोद की बिलकुल नहीं जमती थी। तो उसने अलग कारोबार शुरु किया। वह शशी की तरह यश , नाम और पैसा नहीं कमा सका तो उसे निचा दिखाने हेतु एक औरत को लेके अलग रहता है। इससे शशी दु:खित होती है। कारोबार के कारण उसे अपने ही घर में पराये जैसा व्यवहार

मिलता है। वह सब कुछ पाकर भी पारिवारिक अपनापन ना मिलने के कारण शोषित तथा पीड़ित जीवन बिताती है।

'आकार' की सुचेता रवि की पत्नी थी। रवि तो पैसा कमाने के लिए विदेश जाता है।उसे वहाँ अजय और रेणु मिलते हैं जो उसके शहर के रहने वाले है। इसिलिए वह उन्हें अपना पता दे देता है। जब रेणू और अजय वापस आते हैं तब एक बार रवि के घरवालों को मिलने जाते हैं। वहाँ उन्हे सुचेता मिलती है, जो बहुत भोली, सीधी-साधी और भावुक लगती है। रेणु उसे अपने ऑफिस में नौकरी देती है। सुचेता घर का सारा काम संभालकर, बच्चों को पढ़ाकर और दिनभर ऑफिस में काम करती है, फिर शाम को घर जाकर काम ही काम करती है।रवि तो विदेश ऐश कर रहा था और सुचेता उसकी याद में सपनों के सहारे रवि के घरवालों के कारण शोषित तथा पिड़ित जीवन बिताती दिखाई देती हैं।

समन्वित तुलनात्मक अनुशीलन :

पद्‌माशा तथा सानिया की कहानियों के अध्ययन के पश्चात यह दिखाई देता है कि, उनकी कहानियों शोषित तथा पीड़ित नारी जीवन का चित्रण चित्रित हुआ है।

दोनों की कहानियों की नारी शोषित तथा पीड़ित जीवन बिताती चित्रित होती है। दोनों की कहानियों की नारी बचपन से लेकर किसी ना किसी से शोषित तथा पीड़ित जीवन बिताती दिखाई देती है।

साम्य :

1. पद्‌माशा तथा सानिया दोनों की कहानियों में शोषित तथा पीड़ित जीवन बितानेवाली नारी का चित्रण द्रष्टव्य होता है।
2. दोनों कहानियों में नारी अपने परिवार के कारण ही शोषित तथा पीड़ित जीवन बिताती दिखाई देती है।
3. दोनों की कहानियों में नारी कि पति द्‌वारा शोषित किया है, इसका चित्रण मिलता है।
4. दोनों की कहानियों में बच्चों के कारण माँ शोषित तथा पीड़ित जीवन विताती चित्रित होती है।

वैषम्य :

1. पद्‌माशा की कहानियों में निम्न वर्ग की नारी अपने मालिक द्‌वारा शोषित तथा पीड़ित दिखाई देती है।

- ऐसा चित्रण सानिया की कहानियों में नहीं है।

2. पद्‌माशा की कहानियों में बच्चें के लिए माँ शोषित तथा पीड़ित जीवन बिताती चित्रित होती है।

- सानिया की कहानियों में माँ के कारण बेटी शोषित तथा पीड़ित जीवन बिताती दिखाई देती है।

3.2.2 कर्मठ तथा कठोर नारी :

नारी जितनी भावुक हो सकती है, उतनी ही कर्मठ तथा कठोर भी हो सकती है। समाज में कर्मठ तथा कठोर नारी जीवन भी दिखाई देता है। परिस्थितिवश तथा प्रसंगानुसार नारी में यह प्रवृत्ति पाई जाती है। कहीं - कहीं नारीपर हुए अन्यायों के कारण वह इस वृत्ति की शिकार बन जाती है, तब न ही वह परिवारवालों के संबंध में सोचती है और न समाज के संबंध में। अपने खुशी के लिए, अपने स्वार्थ के लिए वह समाज के साथ - साथ अपने परिवार वालों को भी धोखा देती हैं। उनके साथ बुरा व्यवहार करती हैं। पद्‌माशा तथा सानिया की कहानियों में कर्मठ तथा कठोर नारी का चित्रण मिलता है।

पद्‌माशा की 'उदास गजल सी एक शाम' की रानी विरेश से प्यार करती थी। दोनों भाग के शादी भी करना चाहते थे। लेकिन ऐन वक्त पर विरेश नहीं आकर रानी के विश्वास को तोड़ता है। यह सदमा वह सह नहीं पाती और पागल बन जाती है। तब वह इस सत्य को स्वीकारती है, लेकिन पुरुषों से नफरत करने लगती है। वह कर्मठ तथा कठोर बन जाती है।उसकी शादी एक प्रोफेसर से होती है, लेकिन वह उसे पास नहीं आने देती। ''पुरुष को आहत और अपमानित होते देखकर मुझे कोई अजानासा सकून मिल रहा था।''[1] ऐसा कहती हैं। यह शादी टुटती है, तो वह दुसरी शादी करती है। वहाँ भी ऐसे ही पति को बहुत सताती है। वह खुलेआम प्रेम करनेवालों को अपशब्द बोलती थी। इस तरह रानी कर्मठ तथा कठोर जीवन बिताती दिखाई देती है।

---

1. डॉ. पद्‌माशा झा, उदास गझल सी एक शाम, पृ. क्र. - 43

'छोटे शहर क शकुन्तला' की सुस्मिता ने विनय के साथ प्रेमविवाह किया था। लेकिन विनय एवम् उसके माता - पिता को यह शादी घाटे का सौदा लगती है और विनय सुस्मिता को तलाक की नोटिस भेज देता है। भावुक स्वभाव की सुशा एकदम कर्मठ बन जाती है। ऑफिस में कामकाजी महिलाओं की तरह बन जाती है। उसका स्वभावही कर्मठ बन गया। एक सेमिनार में उसकी निशांत शर्मा से बातचीत और मीटिंग में उससे मित्रता होती है। वह एक दिन भेड़ाघाट के मनगढ़ संगमरमर के श्वेत - नीले पहाडों की कन्दराओं में निशांत के साथ प्रकृति के सौन्दर्य में लीन - सी घूम रही थी। तो निशांत उसकी पीठ पर हाथ रखता है। तब सुस्मिता उसे एकदम से फटकार देती है। कहती है, -''निशांत जी, हमारी मित्रता उतनी ही दूर तक होनी चाहिए जितनी एक पुरुष की दूसरे पुरुष के साथ होती है। इससे ज्यादा मैं अफोर्ड नहीं कर सकती।''[1] इसतरह वह विनय के फैसले से न डगमगाते हुए अकेली स्वतंत्र जीना सीख जाती है। लेकिन वह कर्मठ तथा कठोर जीवन बिताती दर्शीत होती है।

'अनुपमा' की अनुपमा की बड़ी ननद रेवा जो स्वभाव से कठोर तथा कर्मठ थी। खुद ससुराल से लड़-झगड़कर आई थी और मायके में अनुपमा के हर बात पर गलतियां निकाल रही थी। अनुपमा कुछ बोले तो मुहँपर, नहीं बोले तो घमंडी ऐसे दुशन उसे लगाया करती थी। रेवाने अपनी माता को भी विरोध में भड़काया था। जिससे अनुपमा को ज्यादा ही कष्ट मिलते थे। रेवा को धन का लालच था। उसने अपने माता - पिता को अनुपमा के घरवालों की तरफ से दहेज में आया ही क्या है ? ऐसा कहकर उसके खिलाफ उकसाया और एक दिन मौका देखकर तीनों ने मिलकर अनुपमा को जलाकर मार डाला। इस तरह खुदको सुख सुविधा ना मिलने के कारण और स्वभाव से संशयी होने के कारण रेवा कर्मठ तथा कठोर जीवन बिताती दिखाई देती है।

'गर्म बिस्तर' की नीमा का पति परेश एक शराबी आदमी था। वह रोज नीमा को शराब पीकर गालीयाँ देना, मार-पीट करना ऐसे काम करता था। फिर भी वह बच्ची को देखकर चूप रह जाती। लेकिन एक दिन वह एक औरत को घर में ले आता है।तब नीमा चूप नहीं बैठती।उसने उसे विरोध किया और झगड़ा भी। लेकिन वही नीमा को मार-पीटकर घरसे बाहर निकालता है। नीमा इससे बेघर हो जाती है, और एक पंडित के घर पनाह लेती है और उन्हींकी बनके रहती हैं। परिवार और समाज का तनिक भी विचार नहीं करती हैं। अन्याय को सहने के बाद नीमा कठोर तथा कर्मठ

1. डॉ. पद्माशा झा, छोटे शहर की शकुन्तला, पृ. - 64

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

जीवन बिताती दिखाई देती है।

सानिया के 'एक पाऊल पुढे !' की प्राची आलोक की पत्नी थी। प्राची स्वभाव से कर्मठ तथा कठोर थी। वह अन्याय को सह नहीं सकती थी, अन्याय किसीपर भी हो वह उसका मुहतोड़ जवाब देती थी। प्राची अर्किटेक्ट थी, जो ऊर्मिला की बहू थी। ऊर्मिला भी आर्किटेक्ट थी। लेकिन परिवार पर ध्यान देने के कारण वह एक घरेलू नारी बनकर रही थी। लेकिन जब प्राची को पता चलता है, कि वह भी इंजीनियर थी। तो वह भड़क उठती है। उसकी होशियारी देखकर विश्वास याने उसके ससूर को ही वह दोषी ठहराती है। क्योंकि उन्होनें ही उसे घर बिठाया था। प्राची स्वभाव से स्पष्ट होने के कारण कर्मठ तथा कठोर जीवन बिताती थी।

'काजवे' की अनू स्वभाव से कठोर थी। उसने हेमंत के साथ प्रेमविवाह किया था। लेकिन जब उसे ध्यान में आया कि, हेमंत नीतिमुल्यों को भूलकर दुसरों के पैसे लेता है और तभी उनका काम करता है। इसका वह विरोध करती है और मायके चली जाती है। इससे अनू कर्मठ तथा कठोर जीवन बिताती दिखाई देती है।

'स्वरुप' की रेवती एक महत्वाकांक्षी नारी है। उसने जो चाहा वह अपनी मेहनत से हासिल किया था। पुरुषों के बराबरी से वह काम करती थी, बल्कि कुछ ज्यादा ही वह काम के प्रति सजग थी। वह माँ बनना नहीं चाहती थी। लेकिन उसके पिताजी को एक नन्हीं रेवती चाहिए थी। इसलिए वह माँ बनने का निर्णय लेती है। लेकिन वह गर्भवती होने पर भी वैसे ही काम करती जैसे पहले करती थी, और फिर उसका गर्भपात हो जाता है। एक जान चली जाती है, लेकिन यह बात रेवती को एक फियास्को लगती है। इस बात से रेवती कर्मठ तथा कठोर जीवन बिताती चित्रित होती हैं।

'परिघाबाहेर' की इरा ने शादी के बाद उसके पति जनार्दन को हमेशा हर सुख-दुख में, उसकी सफलता के लिए साथ दिया था। अपनी नौकरी को और वहाँ हुए प्रमोशन को जनार्दन के कारोबार के लिए प्रसंगावश छोड़ दिया था। अब सब अच्छी तरह से चल रहा था। तभी इरा का बढ़ती के पद पर तबादला हो जाता है। उसने उसके बच्चों को तो जबाबदार एवम् स्वतंत्र जीना सिखा ही दिया था। जनार्दन को अकेला रहना पड़ता है यह मालूम होते हुए भी वह नौकरी पर जाना चाहती है। इससे इरा कर्मठ तथा कठोर जीवन बिताती दिखाई देती है।

समन्वित तुलनात्मक अनुशीलन :

पद्‌माशा तथा सानिया दोनों को कहानियों के अध्ययन के पश्चात यह ज्ञात होता है कि, दोनों की कहानियों में कर्मठ तथा कठोर नारी जीवन चित्रित होता है।

दोनों की कहानियों में नारी अन्याय के कारण कठोर तथा कर्मठ जीवन बिताती चित्रित होती है। दोनों की कहानियों में नारी अपने स्वार्थ के लिए प्रसंगावश परिवार को भी नहीं छोड़ती है। दोनों की कहानियों में नारी स्वभाव से ही कर्मठ तथा कठोर दिखाई देती है।

पद्‌माशा की कहानियों की नारी प्यार में धोखा खाने पर कर्मठ तथा कठोर जीवन बिताती दिखाई देती हैं। सानिया की कहानियों की नारी स्वभाव के खिलाफ कर्मठ तथा कठोर जीवन बिताती चित्रित होती हैं - विवेच्य कहानीकारों के कहानियों में कर्मठ तथा कठोर नारी जीवन के अंतर्गत जो साम्य - वैषम्य दिखाई देते हैं - वे इस प्रकार हैं-

साम्य :

1. पद्‌माशा तथा सानिया की कहानियों में कर्मठ तथा कठोर नारी जीवन का चित्रण दृष्टिगोचर होता है।
2. दोनों की कहानियों में नारी अन्याय के कारण कठोर तथा कर्मठ जीवन बिताती चित्रित, होती है।
3. दोनों की कहानियों की नारियों को प्रेमविवाह के बाद भी कर्मठ तथा कठोर जीवन बिताना पड़ता है, यह द्रष्टव्य होता है।

वैषन्य :

1. पद्‌माशा की कहानियों की नारी परिस्थितिवश कर्मठ तथा कठोर जीवन बिताती हैं।
- सानिया की कहानियों की नारी स्वभाव से ही कर्मठ तथा कठोर दिखाई देती हैं।
2. पद्‌माशा की कहानियों में नारी के कर्मठ स्वभाव के कारण दुसरे की जान स्वार्थ हेतु जाती है, ऐसा चित्रण मिलता है।
- सानिया की कहानियों में ऐसा चित्रण नहीं मिलता।

3.3 नारी का सामाजिक जीवन :

एक से अधिक लोगों से या व्यक्ति समुदाय से समाज निर्माण होता है। व्यक्ति से परिवार और परिवार से समाज की रचना होती है। नारी भी उस समुदाय का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। लेकिन उस समुदाय में पुरुष और नारी दोनों में पर्याप्त अंतर हैं, विशेषत: भारतीय संस्कृति में। भारतीय समाज की अपनी एक अलग सी संरचना होती हैं , उदा. व्यक्ति, समुदाय, उपसमुदाय। इन सबका एक विशिष्ट सा कार्य होता हैं, स्थान होता हैं। अपना-अपना कार्य संपन्न करना उनका कर्तव्य होता है। उनका जो कार्य होता है उसके लिए उन्हें कुछ अधिकार दिए जाते हैं। उस कार्य को उचित बताने के लिए कुछ नियम होते हैं। भारतीय समाज में जो नियम, विधि हैं, रीतिनितियों में जो हक पुरुष को है, वह स्त्री को नहीं हैं। यदि वहीं अपवाद रुप में नारी को इसका अवसर मिला भी तो समाज में कोई इज्जत नहीं करता। मनुष्य समाजप्रिय प्राणी है। जब से वह इस संसार में आता है तब से लेकर अंत तक उसे समाज से संबंधित रहना पड़ता है। वास्तव में नारी की सामाजिक स्थिति दोहरे रुपों में सामने आती है। एक ओर वह प्रगति के पथ पर है तो दूसरी ओर वह पतन की गर्त में डुबती चली जा रही है। अपने जीवन में आती हुई कठिनाइयों या परिस्थिति के कारण उसे विवश होना पड़ता है। साथ ही कभी - कभी घृणित जीवन जीना पड़ता है।

पद्माशा तथा सानिया ने अपने कहानियों में नारी जीवन को चित्रित किया है, जो अपनी आशा -आकांक्षाओ को पूर्ण नहीं कर सकती। समाज और परिवार के अधिकार तथा दबावों के कारण वह कुंठित जीवन बिताती है। इन नारियों को परिस्थितिनुकूल तथा विवशता के कारण भिन्न रुपों को अपनाना पड़ता है। इसी तरह भिन्न रुपों को अपनाती हुई वह विवश तथा घृणित जीवन बिताती है। किंतु इन लेखिकाओं ने अपने नारी पात्रों को अपनी मुक्ति तथा स्वतंत्रता की दृष्टि से जागृत किया है। अत: विवश नारी अपने जीवन के प्रति जागृत होती है। परिणामत: नारी के विवश तथा घृणित जीवन के साथ - साथ जागृत नारी के जीवन को भी दिखाया है।

3.3.1 विवश तथा घृणित नारी :

नारी चरित्र का विशेष महत्त्व समाज में होता हैं। समाज में ही स्त्री के चरित्र की अधिक चिंता की जाती हैं। सामाजिक वास्तव्य में उसे अपने व्यक्तित्व की ओर विशेष ध्यान देना पड़ता है। कभी - कभी नारी अपनी असहायता के कारण परिवार के साथ - साथ समाज के अत्याचारों को सहती रहती हैं। क्योंकि ऐसी नारियों में अत्याचार का विरोध करने की क्षमता होते हुए भी वह

स्वयं को शक्तिहीन समझने लगती है और विवश तथा घृणित जीवन बिताती हैं।

पद्माशा की 'बर्फ' की दीपा एक लेक्चरर है। दीपा ने देवेन के साथ बाधाओं और चुनौतियों के बावजूद प्रेमविवाह किया था। लेकिन देवेन इस बंधन को निभा न सका। वह उसे और बच्चे को छोड़कर दिल्ली चला गया। बाद में दीपा की गहरी दोस्ती कुणाल के साथ होती हैं। एक बार देवेन घर आता हैं, और कुणाल के बार - बार फोन आते देख दीपा को इसका कारण पुछता है, इसपर दीपा कहती है - "साफ-साफ ही समझ लो"[1] जब देवेन समाज की दुहाई देता कि ऐसे रिश्तों कों समाज मान्यता नहीं देता है। इससे वह कुछ नहीं बोल पाती। क्योंकि इसी समाज में उसे रहना था, बाबुल को भी अच्छा इन्सान बनाना था। जो समाज के मान्यताओं का ही पालन करके ही हो सकता था। इस कारण दीपा को कुणाल अच्छे लगते थे, फिर भी वह विवश तथा घृणित जीवन बिताती चित्रित होती है।

'कहानी और रिपोर्ताज के बीच' की लिली वीमेंस कॉलेज के होस्टेल में रहती थी। लेकिन वह 'को-एज्युकेशन' में पढ़ना चाहती थी। क्योंकि उसे जिस विषय में रुचि थी वह विषय वीमेंस कॉलेज में नहीं पढ़ाया जाता था। इसके लिए वह छात्रावास की अधिक्षिका से बिनती कर रही थी लेकिन उसे वह विषय नहीं लेने देतें। उसका सिर्फ लड़कों के कॉलेज में पढ़ना चाहना यह अपराध बनता है और उसे न किए गए अपराध की सजाओंका सिलसिला शुरु होता है। उसके विचारों के कारण वह विवश तथा घृणित जीवन बिताती दिखाई देती है।

'चांद पीला क्यों है ?' की मोहिनी का रंग सांवला था और इस कारण ही उसकी शादी तय नहीं हो रही थी। उसे लगता है कि, -"सारे लड़के वालों को बहुएँ गोरी ही गोरी चाहिए चाहे उनका लड़का आबनूस हो अथवा कौंवा फिर सांवली लड़कियाँ कहां जाये !"[2] ज्यादा दिनों तक लड़की का घर में रहना अच्छा नहीं समझा जाता है। मोहिनी तो सांवली भी थी। इसीकारण उसे विवश तथा घृणित जीवन बिताना पड़ता है।

'उदास गजल सी एक शाम' की रानी वीरेश के साथ भागकर शादी करनेवाली थी। पाकड़ वृक्ष के नीचे बैठकर वह उसका इंतजार करती है, लेकिन ऐन वक्त पर वीरेश आता नहीं। वह वही सो जाती है और माँ तथा आसपड़ोस के लोगों का शोर सुनकर ही उठती है। रानी को

---

1. डॉ. पद्माशा झा, बर्फ, पृ. क्र. -12

2. डॉ. पद्माशा झा. चांद पीला क्यों है ?, पृ. क्र. -22

सबसे बहुत मार खानी पड़ती है, और गालियाँ भी। इस सदमें से वह पागल ही बनती है और साथ - साथ विवश तथा घृणित नारी जीवन बिताती दिखाई देती है।

'डॉग-फ्लावर' की नायिका के होस्टेल में एक लड़की उसके ब्लॉक में रहती थी। जो बहुत ही स्वच्छंदी स्वभाव की थी, शराब और सिगारेट पीती थी। राज को देर से आती और रोज नए लड़के के साथ आती थी। कपड़े इतने कसे हुए पहनती की देखनेवालों के मन में घृणा पैदा हो। इस लड़की का जीवन स्वच्छंदी होकर भी वह दुसरों के मन में एक विवश तथा घृणित नारी का जीवन बिताती थी।

'अनुपमा' की अनुपमा ससुरालवालों के स्वभाव के कारण विवश नारी जीवन बिताती दिखाई देती है। उसके ससुरवाले धन के लालची थे।दहेज में जितना दिया उतना उन्हें कम लगा था। अनुपमा का उनके प्रति व्यवहार अच्छा था, बल्कि वह बेचारी तो चुपचाप सब सह रही थी वह अत्याचार विरोध करने की क्ष्मता होने के बावजूद सिर्फ नई नवेली बहू के रुप में होने के कारण सबके मन को सँभालती रही।

सानिया की 'परिमाण' की देवकी कैलास से बहुत प्यार करती थी। लेकिन कैलास को बताने से पहले ही वह फिल्मों में काम करने के हेतू घर से भाग जाता है और देवकी की शादी सुखदेव से होती है। बाद में दोनों एक दुसरे को मिलते है।यह बात सुखदेव को पता चलती है और उसको शक भी था कि, उसकी बेटी रितू कैलास की ही बेटी है। देवकी के कैलास से ही नहीं तो अनेकों के साथ संबंध थे। इसीकारण वह विवश तथा घृणित जीवन बिताती दिखाई देती है।

'क्षितिज' की यशोधरा पढ़ाने के लिए न्यूयॉर्क जाती है, और वही एक अमेरिकन ख्रिश्चन लड़के के साथ शादी करती है।अपने माता-पिता की इजाजत लिए बगैर शादी करती है। भारतीय संस्कृति में अंतरजातीय विवाह करनेवालों के प्रति घृणा की दृष्टि से देखते है। इस का सामना यशो को नहीं तो उसके माता-पिता को करना पड़ता है।जिसका एहसास उसे आठ साल बाद जब उन्हें मिलने आती है तब होता है। उसे यहँ आकर सबके सवालों का जवाब दे देके एक विवश तथा घृणित जीवन बिताना पड़ता है।

'काजवे' की लीला का राघव के साथ राघव न चाहते हुए भी विवाह होता है।राघव की आधी उम्र उसके भाई बहनों को बढ़ा करना, उनकी शादी करना इसमें ही चली गई थी।बाद में वह सिर्फ माँ के जिद के कारण ही शादी करता है। इससे लीला आस पड़ोस वालों से भी एकदम कटी

- कटी सी रहती है। वह बच्चा चाहती थी लेकिन राघव उसके पास ही नहीं आता था। इस कारण वह समाज के लिए कुतुहल का विषय बन चुकी थी और वह खुद एक विवश तथा घृणित जीवन बिताती चित्रित होती है।

'चित्र' की शशी बहुत ही महत्वाकांक्षी थी, और होशियार भी। उसने अपने कारोबार को एक उँचाई पर रखा था जहाँ तक पहुँचना किसी स्त्री के लिए मुश्कील था। लेकिन यह करते - करते उसका घर पर ध्यान ही न रहा। दोनों बच्चें अपनी-अपनी राह पर चलते रहें।उसका बेटा गौतम इंजिनिअरींग कर रहा था और बार बार फेल हो रहा था। बेटी आरती सिर्फ बी. ए. तक ही पढ़ने वाली थी। सब शशी को इसके लिए कहतें है - ''शशीनं स्वत:च्या करिअर, महत्वकांक्षा, यशापायी घराकडे, मुलांकडे पूर्ण दुर्लक्ष केलं आणि दोन्ही मुलं....... सामान्य निपजलीत''[1] (शशी ने खुद के करिअर, महत्वाकांक्षा और यश के लिए घर और बच्चों की तरफ पूरा दुर्लक्ष किया और दोनों बच्चों को सामान्य उपज लिया।) भारतीय संस्कृति में माँ का पहला कर्तव्य घर और बच्चों की अच्छी परवरीश करना होता है। शशी इस में खरी नहीं उतरती इसलिए उसे बच्चों के कारण विवश और घृणित जीवन जीना पड़ता हैं ।

समन्वित तुलनात्मक अनुशीलन :

पद्माशा तथा सानिया की कहानियों के अध्ययन के पश्चात यह ज्ञात होता है कि, नारी कें सामाजिक जीवन में नारी को विवश तथा घृणित जीवन बिताना पड़ता है, यह द्रष्टव्य होता है। दोनों की कहानियों की नारियाँ मानसिक पीड़न का विरोध करने की क्षमता होते हुए भी शक्तिहीन समझकर विवश तथा घृणित जीवन बिताती दिखाई देती है। दोनों की कहानियों की नारियाँ अपने चरित्र के लिए विवश तथा घृणित जीवन बिताती दिखाई देती है।

विवेच्य कहानीकारों की कहानियों के अध्ययन के पश्चात विवश तथा घृणित नारी जीवन के अंतर्गत जो साम्य - वैषम्य परिलक्षित होते हैं, वें इस प्रकार हैं -

साम्य :

1. पद्माशा तथा सानिया के कहानियों में सामाजिक नारी जीवन में नारी को विवश तथा घृणित जीवन बिताना पड़ता है, यह दृष्टिगोचर होता है।

---

1. सानिया, चित्र, पृ. क्र. -117

2. दोनों की कहानियों की नारियाँ अन्याय या मानसिक पीड़न का विरोध करने की क्षमता होते हुए भी शक्तिहीन दिखाई देती हैं ।

3. दोनों की कहानियों की नारियाँ अपने चरित्र को बचाने के लिए विवश तथा घृणित जीवन बिताती चित्रित होती हैं ।

वैषम्य :

1. पद्माशा की कहानियों की नारी मजबुरी में विवश तथा घृणित जीवन बीताती चित्रित होती है।

- सानिया की कहानियों की नारी समाज द्वारा बनाए गए नियमों का उल्लंघन करने के कारण विवश तथा घृणित जीवन बिताती चित्रित होती है।

2. पद्माशा की कहानियों की नारी आर्थिक दृष्टि से सक्षम ना होने के कारण विवश तथा घृणित जीवन बिताने पर मजबूर होती है।

- सानिया की कहानियों की नारी आर्थिक स्तर से सक्षम होकर भी पारिवारिक साथ ना मिलने के कारण विवश तथा घृणित नारी जीवन बिताती है।

3. पद्माशा की कहानियों की नारी स्वभाव से भावुक होने के कारण विवश तथा घृणित जीवन बिताती चित्रित होती है।

3.3.2 जागृत नारी :

नारी को समाज असहायता तथा दयनीयता होने के कारण अत्याचार एवं अन्याय को सहना पड़ता है। अपनी भावुकता तथा विवशता के कारण वह किसी का विरोध नहीं कर सकती, सहनशीलता के कारण वह दुखों को सहती जाती हैं , जिन नारियों के पास सहनशक्ति ज्यादा होती हैं वह अंत तक जीवन में आती हुई कठिनाइयों तथा संकटों का सामना करती है और जिनके पास सहनशक्ति कम होती है वह परिस्थिति से समझौता करती दिखाई देती है। किंतु आधुनिक युग की नारी में धीरे-धीरे विकास हो रहा है।नारी अन्याय एवं अत्याचार का विरोध करती दिखाई देती है, और एक जागृत जीवन बिता रही है। पद्माशा तथा सानिया जी ने भी विवेच्य कहानियों में जागृत नारी को चित्रित किया है।

पदमाशा के 'उदास गजल सी एक शाम' की रानी वीरेश के प्यार में उससे धोखा खाती है। इस सदमें से वो पागल की तरह बन जाती है। घरवालें और गाँववालें उसे पागल ही ठहराते हैं। रानी जैसे ही समय बितता है वैसे वह इस सदमे को भूलकर बाहर आ जाती है और अपनी पढ़ाई पूरी करके एक लेक्चरर बनती है। इस तरह वह एक जागृत नारी जीवन बिताती है।

'छोटे शहर की शकुन्तला' की सुस्मिता ने विनय के साथ माता - पिता के मर्जी के खिलाफ प्रेम विवाह किया था। लेकिन विनय और उसके घरवालों को यह शादी घाटे का सौदा लगा था।इसीलिए वह उसे तलाक की नोटिस भिजवाता है।इससे सुशा अकेली पड़ जाती है। लेकिन फिर भी वह विनय के इस फैसले से ड़गमगाती नहीं है। उसे लगता है कि - ''वह किस अपराध के लिए खुद को सजा देती रही''[1] धन के लालची लोग रिश्तों की डोर नहीं समझ सकते। यह सोचकर वह विनय को तलाक दे देती है। इस तरह सुशा दूवारा जागृत नारी जीवन को दर्शाया है।

'गर्म बिस्तर' की नीमा का पति शराबी था।उसे हमेशा गाली - गलोच देता था, मारपीट करता था। लेकिन नीमा रिश्ते को निभाने के लिए सब सहती है फिर भी एक दिन वह दूसरी औरत को ले आता है। इससे नीमा चिल्ला उटती है और परेश पर बरस पड़ती है।लेकिन वह उसकी एक न सुनकर उसे ही मारकर घर से निकाल देता है। इससे नीमा तंग आती है और एक पंडित के घर में पनाह पाकर उसी की बनके रहती है। यह बात समाज कभी मानेगा नहीं उसे पता था लेकिन वह करे भी क्या करें ? यहाँ उसे सब मिलता था जो परेश ने नहीं दिया। एक दिन उसके रामधन काका उसे मेले में मिलते है। वे उसे कहते हैं कि तुमने यह ठिक नहीं किया क्योंकि ब्राह्मनों में औरत का दुसरा ब्याह नहीं होता। इस बात पर नीमा व्यंग से हंसती है और कहती है कि, - ''रामधन काका, ब्राह्मनों में बेटी कसाई के हाथों बेची जा सकती है, ब्राह्मनों में बहू जलाई जा सकती है। ब्राह्मनों में विधवा औरतो के साथ घर के भीतर व्यभिचार दिया जा सकता है और ब्राह्मन औरत इज्जत से जीने के लिये किसी का हाथ नहीं पकड़ सकती। तुम्हारे कानून का भी जवाब नहीं है ?''[2] इस तरह नीमा पति दूवारा किए गए अत्याचार के खिलाफ जागृत हो उठती है। यहाँ नीमा दूवारा जागृत नारी जीवन दिखाई देता है।

---

1. पद्माशा झा, छोटे शहर की शकुन्तला, पृ. क्र. -68
2. पद्माशा झा, गर्म बिस्तर, पृ. क्र. - 82-83

सानिया के 'एक पाऊल पुढे !' की प्राची ऊर्मिला की बहू है। जो एक स्पष्ट बोलनेवाली नारी है जो होशियार, महत्वाकांक्षी और एक आर्किटेक्ट भी है।जब वह आलोक के साथ शादी करके आती है तब उसे पता चलता है कि, ऊर्मिला भी एक आर्किटेक्ट ही है। ऊर्मिला विश्वास के फर्म में आर्किटेक्ट का काम करती थी। वही उसे विश्वास शादी के लिए पुछता है और फिर शादी के बाद वह परिवार संभालने में ही उलझी रहती है, और विश्वास ने भी कभी उसे हौसला नहीं दिया, ना ही मौका दिया। यह बात जब प्राची को पता चलती है, तो उसे बहुत दुख होता है। बाद में प्राची उसे जागृत करती है और उसे अपने कंपनी का कुछ काम भी देती है। बरसों बाद ऊर्मिला फिर काम करने लगती है। यहाँ प्राची द्वारा एक जागृत नारी जीवन को दिखाया है।

'काजवे' की अनू ने हेमंत के साथ प्रेमविवाह किया था हेमंत दिखने में रहन-सहन में, और दुसरों को बातों ही बातों में अपना बनाने में वाकीफ था। उसे लगा इसके साथ वह खुश रहेगी। लेकिन शादी के बाद वह यह जान लेती है कि, जो विचार, तत्व अनू के है वे हेमंत के नहीं है।हेमंत एक भ्रष्टाचारी आदमी था, लोगों से पैसे लेकर ही उनके काम करता था। उसको इसी कारण ही सभी पहचानते थे, और यह बात अनू को कभी भी पसंद नहीं थी। वह उसको यह सब छोड़ने को कहती है। वह नहीं मानता तो फिर वह मायके चली आती है। अनू एक जागृत नारी दिखाई देती है क्योंकि हेमंत जब तक बुरा काम छोड़ता नहीं तब तक वह बच्ची को लेकर मायके में ही रहती है। इस तरह अनू जागृत नारी जीवन बिताती दिखाई देती है।

'परिघाबाहेर' की इरा स्वभाव से समझौता करनेवाली नारी थी। इरा ने अपने पति को उसके हर स्थिति में उसे साथ दिया था। उसके कारोबार के लिए अपनी नौकरी तक उसने छोड़ी थी। अब बच्चें बड़े हो गये थे। उसने उनको स्वतंत्र और जबाबदार बनाया था। जब पारिवारिक जिम्मेदारियाँ खत्म होती हैं तभी उसका प्रमोशन पर तबादला दुसरे शहर में होता है। उसके पति को शक है कि, उसीने तबादला करवाया हैं। फिर भी वह जाना चाहती है। पति यहाँ अकेला रहता है, लेकिन इरा अपने करिअर के प्रति जागृत दिखाई देती है।

'आकार' की सुचेता रेणु के ऑफिस में काम करती थी। रेणु और अजय विदेश में रहते थे। सुचेता का पति रवि उन्हें वही मिलता है। यहाँ आनेपर रवि के घरवालों को दोनों मिलते हैं। वहाँ उन्हें सुचेता भी मिलती है। रेणु उसे नौकरी के लिए पुछती है और सुचेता भी आती है। लेकिन उसे घर का सारा काम करना, ननद के बच्चों को संभालना, पढ़ाना आदि सब करके फिर ऑफिस

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

का काम करना पड़ता था। वह रवि के घरवालों से बहुत ही लगाव से रहती थी। रवि एक ऐयाशी आदमी था। अच्छी नौकरी छोड़कर पैसे कमाने हेतु विदेश सुचेता को अकेले छोड़कर चला जाता है। यहाँ सुचेता एक दिन रवि उसे भी विदेश ले जाएगा यह सोचकर उसके घरवालों का सारा काम करती थी। लेकिन जब रेणु के यहाँ से नौकरी छोड़ कर अच्छे आमदनी वाली नौकरी वह पकड़ती है तब उसे बाहर की जिंदगी समझ में आती है। वह बहुत भोली थी इसीकारण उसका घरवाले फायदा उठाते थे। वह फिर उन्हें पैसे देना कम करती है और काम भी ज्यादा नहीं करती थी। तो घरवाले उसे बदनाम करते फिरते हैं। सुचेता जैसी भोली लड़की समाज के व्यवहार के कारण जागृत होती दिखाई देती है। धन के लालची लोंगो के खिलाफ उन्ही कें जैसा व्यवहार करती चित्रित होती है। इस तरह जागृत नारी जीवन दिखाई देता है।

समन्वित तुलनात्मक अनुशीलन :

पद्माशा तथा सानिया की कहानियों के अध्ययन के पश्चात नारी के सामाजिक जीवन में नारी का जागृत जीवन दृष्टिगोचर होता है।

दोनों की कहानियों में जागृत नारी का जीवन चित्रित हुआ है। दोनों की कहानियों में नारी अन्याय के खिलाफ जागृत होकर जीवन बिताती चित्रित होती है। दोनों के कहानियों में नारी अन्याय को सहकर जब सहने की शक्ति खत्म होती हैं तभी जागृत होती दिखाई देती है। दोनों की कहानियों की नारी परिवार वालों के द्वारा धन के प्रति लालच के कारण ही अकेली जागृत जीवन बिताती चित्रित होती है।

पद्माशा की कहानियों की नारी अन्याय के खिलाफ विद्रोही जागृत जीवन बिताती दिखाई देती है। सानिया की कहानियों की नारी समझदारी से जागृत जीवन बिताती चित्रित होती है।

विवेच्य कहानीकारों के कहानियों के अध्ययन के पश्चात जागृत नारी के अंतर्गत जो साम्य - वैषम्य परिलक्षित होतें हैं वे इस प्रकार हैं -

साम्य :

1. दोनों की कहानियों में नारी के सामाजिक जीवन में जागृत नारी का चित्रण द्रष्टव्य होता है।
2. दोनों की कहानियों में नारी अन्याय के खिलाफ जागृत होकर जीवन बिताती चित्रित होती है।

3. दोनों की कहानियों में नारी जागृत लेकिन सहनशील दिखाई देती है।

वैषम्य :

1. पद्‌माशा की कहानियों की नारी अन्याय के खिलाफ विद्रोही जागृत जीवन बिताती चित्रित होती है।

- सानिया की कहानियों की नारी समझदारी से जागृत जीवन बिताती चित्रित होती है।

2. पद्‌माशा की कहानियों की नारी अन्याय के खिलाफ जागृत होती है, लेकिन समाज के नियमों को तोड़ती दिखाई देती है।

- सानिया के कहानियों में ऐसा चित्रण नहीं मिलता।

3.4 नारी का आर्थिक जीवन :

अर्थ ने सदैव ही मनुष्य के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। अर्थ ही व्यक्तियों के पारस्पारिक संबंधों की नींव है, अर्थ मानव का केंद्र बन चुका है। आर्थिक स्थिति के कारण एक व्यक्ति हीं नहीं, एक देश भी खतरे में पड़ जाता है। आज के युग में आर्थिक स्थिती अच्छी हो तो सब कुछ चलता है। आर्थिक समस्या के कारण परिवार बिगड़ते हैं और बनते भी हैं। भारतीय समाज में नारी को हमेशा उपेक्षित और आर्थिक अधिकारों से वंचित रखा जाता है। अर्थ ही सब सुख:दुखों का मूल है। अर्थाभाव का परिणाम नारी जीवन पर दिखाई देता है।

''आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र 'न' रहने के कारण कुँआरी नारियों को पिता पर निर्भर रहना पड़ता है, और विवाहित नारियाँ पति की इच्छाऔं पर जीवन यापन करती हैं अत: वे न तो स्वतंत्र चिंतन कर सकती है और न ही स्वतंत्रतापूर्वक किसी काम को संपन्न कर सकती हैं।''[1]

समाज में अर्थ को विशेष महत्व दिया जाने के कारण जिस व्यक्ति की आर्थिक स्थिति अच्छी हो, समाज में वही प्रतिष्ठित कहलाता है। नारी के विषय में विशेषकर आर्थिक दृष्टि से वह परावलंबी ही होती है लेकिन अभी कई नारियाँ स्वावलंबी भी दिखाई देती हैं। पद्‌माशा और सानिया की कहानियों में स्वावलंबी और परावलंबी दोनों नारियों के जीवन का चित्रण द्रष्टव्य होता हैं।

---

1. डॉ. रामेश्वर नारायण रमेश, साहित्य में नारी : विविध संदर्भ, पृ. -14

3.4.1 स्वावलंबी नारी :

अर्थ जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग है। इसपर जीवन की सारी समस्याएँ निर्भर हैं। आधुनिक युग में व्यक्ति परंपरागत समाज और परिवार से दूर होता जा रहा है। अर्थ व्यवस्था भी बदलती जा रही है। पुरुष के साथ नारी को घर चलाने के लिए नौकरी करनी पड़ती है। कुछ नारियाँ ऐसी होती हैं जिन्हे विविध कारणों से अपने उदर निर्वाह के लिए स्वावलंबी बनना पड़ता है। किंतु समाज अपने ढंग से जीनेवाली नारी को बर्दाश्त नहीं कर सकता। आर्थिक स्वावलंबन के मार्ग में नारी के सामने बहुत सारी कठिनाइयाँ आती हैं। समाज पग-पग पर उसके मार्ग में बाधाएँ खड़ी कर देते हैं। परिवार में रहकर बाहर नौकरी करके भी उसका जीवन शापित बन जाता है। ''भारतीय नारी के जीवन में पुरुष का होना आवश्यक है। उसके सहारे के बिना स्त्री के अस्तित्व की कल्पना भी कठिन है। यदि भौतिक रुप से वह आत्मनिर्भर भी हो तो भी मानसिक रुप से किसी पुरुष के अस्तित्व से सुरक्षित होना उसकी मानसिकता है और उसके संस्करों के कारण बन गया उसका स्वभाव ''[1]

पद्माशा तथा सानिया की कहानियों में भी स्वावलंबी नारी जीवन का चित्रण द्रष्टव्य होता है। पद्माशा की 'बर्फ' की दीपा स्वावलंबी नारी जीवन बिताती द्रष्टव्य होती है। दीपा का पति देवेन शादी जैसे बंधन से मुक्ति पाने के लिए उसे और नन्हें बच्चें को छोड़कर चला जाता है। दीपा इस सदमें सें घर में नहीं बैठती। वह एक कॉलेज में लेक्चरर की नौकरी करती है और अपना जीवन स्वावलंबी बिताती है।

'चांद पीला क्यों है ?' की मोहिनी का पति समाज में रहने के लिए अपना आर्थिक स्तर बढ़ाने के लिए मोहिनी को नौकरी लगाता है। मोहिनी एम. ए. पास है। पति के कहने से ही सही मोहिनी स्वावलंबी नारी जीवन बिताती दिखाई देती है।

'रोज-रोज' की सुरजी एक मजदूर है। पहले बाप के घर मजदूरी करती थी। अब पति के घर करती हैं। सुरजी दुसरों के खेतों नें काम करके अपना घर चलाती है। सुरजी द्वारा एक स्वावलंबी नारी यहाँ दिखाई देती है।

'उदास गजल सी एक शाम' की रानी वीरेश से प्यार करती थी। रानी इस सदमें से पागल सी बन जाती है। बाद में वह इस सदनें से बाहर निकलकर पढ़ाई करती है और लेक्चरर बनती

---

1. रेणुका नैयर, नारी स्वातंत्र्य के बदलते रुप, पृ. -172

है। वह स्वावलंबी बन जाती हैं। यहाँ रानी द्वारा स्वावलंबी नारी दिखाई देती है।

'छोटे शहर की शकुन्तला' की सुस्मिता ने विनय के साथ प्रेमविवाह किया था। लेकिन विनय और उसके घरवालों के लिए यह शादी एक घाटे का सौदा थी। इसलिए विनय सुशा को तलाक देता है। लेकिन फिर सुश्मिता एक्सिक्युटिव ऑफिसर बनती है। इससे वह किसी पर निर्भर नहीं थी। एक स्वावलंबी नारी जीवन बिताने वाली सुशा विनय के इस व्यवहार से दुखी तो हो गई थी लेकिन किसीपर बोझ बनकर नहीं रही। यहीं स्वाभिमान उसके स्वावलंबी जीवन से दिखाई देता है।

सानिया की कहानियों में भी स्वावलंबी नारी दिखाई देतो है। उनकी 'परिमाण' की देवकी अपने पति के कारोबार में मद्रत करती थी और उसका खुद का गुलाब फुलों का बगीचा था। वह फुल परदेस भेजती थी। देवकी सबको संभालती थी घर, परिवार उसके पिताजी के दोस्त उनको भी संभालती थी। यहाँ देवकी, द्वारा स्वावलंबी नारी दिखाई देती है।

'क्षितीज' की यशोधरा पढ़ाई के लिए न्यूयॉर्क चली जाती है और वहीं अपने माता - पिता को बिना पुछे एक अमेरिकन ख्रिश्चन लड़के के साथ शादी करती है। यशोधरा स्वावलंबी थी, वह वहाँ नौकरी करती थी। तभी वह अंतरदेशीय विवाह कर पाती है। यशोधरा अमेरिका में स्वावलंबी नारी जीवन बिताती चित्रित होती है।

'एक पाऊल पुढे !' की प्राची एक आर्किटेक्ट इंजिनियर है। जो ऊर्मिला की बहू है और आलोक की पत्नी प्राची स्वावलंबी नारी है। वह कंपनी में आर्किटेक्ट है। बहुत महत्वकांक्षी और होशियार है। वही ऊर्मिला को भी अपने कंपनी का काम देकर स्वावलंबी बनाती है। ऊर्मिला भी एक आर्किटेक्ट थी लेकिन घर में उलझी रहने के कारण वह परिवार की देखभाल करती रही। लेकिन प्राची ने ऊर्मिला को अपनी कंपनी की तरफ से काम देकर उसे भी स्वावलंबी बनाती दिखाई देती हैं।

'स्वरुप' की रेवती एक महत्वाकांक्षी, स्वावलंबी नारी है। उसने जो पद चाहा उसे हासिल किया। उसका पति निरंजन और उसमें सामंजस्य होने के कारण वह हमेशा अपने कामों में ही उलझी रहती हैं। यहाँ रेवती द्वारा एक स्वावलंबी जीवन बितानेवाली नारी को चित्रित किया है।

'चित्र' की शशी एक चालाख, महत्वाकांक्षी और होशियार स्वावलंबी नारी है। उसने अपने ससुर के कारोबार को अपनी होशियारी से एक ऊंचाई प्रदान की थी। शशी स्वावलंबी भी लेक्नि पारिवारिक स्थिति में वह नाकामयाब थी। वह कारोबार चलाती थी और उसके जैसा काम उसका पति नहीं कर पा रहा था। इसीकारण वह उसे निचा दिखाने के लिए दूसरी औरत को लेके अलग रहता है। फिर भी शशी एक स्वावलंबी जीवन बिताती दिखाई देती है।

'परिघाबाहेर' की इरा नौकरी करती थी और परिवार को भी संभालती थी जिसने अपने पति के कारोबार के लिए नौकरी के साथ हमेशा समझौता किया। बच्चें छोटे हैं, कारोबार अभीतक अच्छा नहीं चल रहा है ऐसी स्थितियोंको संभालने के लिए उसने प्रमोशन छोड़ा था। लेक्नि अब उसका तबादला हो गया था, तो वह अकेली जाना चाहती हैं, क्योंकि कारोबार भी अच्छा चल रहा था और बच्चें भी स्वतंत्र, जबाबदार बन चुके थे। पति के मन में नहीं था कि वो जाये फिर भी वह तबादले के जगह पर जाना चाहती है। यहाँ इरा द्वारा स्वावलंबी जीवन बिताने वालो नारी दिखाई देती है।

'आकार' की रेणु एक स्वावलंबी नारी है। रेणु और उसका पति अजय विदेश में रहते थे . बाद में वह यहाँ आते हैं और अपना छोटा कारोबार शुरु करते हैं . रेणु ऑफिस संभालती थी और अजय बाहर के काम करता था। रेणु द्वारा यहाँ एक स्वावलंबी नारी दिखाई देती है।

रेणु खुद स्वावलंबी थी और उसने सुचेता को भी अपने ऑफिस में काम देकर स्वावलंबी बनाया था। सुचेता का पति रवि रेणु को विदेश मे मिला था। जो एक ऐय्याशी किस्म का आदमी था, रोज नई लड़की के साथ दिखाई देता। अपनी पत्नी कों सौप जिस तरह अपनी केंचुल फेंकता है वैसे ही मैं पिछे पत्नी को छोड़कर आया हुँ ऐसे कहता था। रेणु जब सुचेता को मिलती हैं तो उसका स्वभाव देखकर अपने ऑफिस में काम करने के लिए प्रेरित करती है। रेणु और सुचेता द्वारा स्वावलंबी जीवन बितानेवाली नारी यहां दिखाई देती है।

समन्वित तुलनात्मक अनुशीलन :

पद्माशा और सानिया की कहानियों के अध्ययन के पश्चात नारी के आर्थिक जीवन में स्वावलंबी जीवन बितानेवाली नारी दिखाई देती है। दोनों की कहानियों की नारी परिवार की भलाई के लिए, खुद के स्वाभिमान के लिए स्वावलंबी जीवन बिताती दिखाई देती है। दोनों की कहानियों की स्वावलंबी नारी विवाहित चित्रित होती है।

पद्माशा की कहानियों की नारियाँ समाज में अपना आर्थिक स्तर बनाने के लिए स्वावलंबी बनी दिखाई देती है। जो जीवन में कुछ पाना चाहती है। पद्माशा की कहानियों की नारियाँ को मजबुरीने स्वावलंबी बनाया है। सानिया की कहानियों की नारियाँ को खुद की प्रेरणाने स्वावलंबी बनाया है।

सानिया की कहानियों में एक नारी दुसरी नारी के स्वावलंबी बनाती दिखाई देती है। तो ऐसा चित्रण पद्माशा की कहानियों में नहीं दिखाई देता।

विवेच्य कहानिकारों की कहानियों के अध्ययन के पश्चात स्वावलंबी नारी जीवन को लेकर जो साम्य - वैषम्य परिलक्षित होता हैं - वे इस प्रकार हैं -

साम्य :

1. पद्माशा तथा सानिया की कहानियों में नारी के आर्थिक जीवन में स्वावलंबी नारी जीवन चित्रित दिखाई देता है।
2. दोनों की कहानियों में स्वावलंबी नारी विवाह के बाद स्वावलंबी जीवन बिताती द्रष्टव्य होती है।

वैषम्य :

1. पद्माशा की कहानियों की नारियाँ को आर्थिक मजबुरी ने स्वावलंबी बनाया है यह द्रष्टव्य होता है।
- सानिया की कहानियों की नारियाँ अंतरिक प्रेरणा से स्वावलंबी बनी दिखाई देती हैं।
2. सानिया की कहानियों की एक नारी दुसरी नारी को स्वावलंबी बनाती द्रष्टव्य होती है।
- ऐसा चित्रण पद्माशा की कहानियों में नहीं दिखाई देता।
3. पद्माशा की कहानियों की नारियाँ समाज में अपना आर्थिक स्तर बनाएँ रखने के लिए स्वावलंबी बनी चित्रित होती है।
- सानिया की कहानियों की नारियाँ खुद स्वावलंबी हैं जों जीवन मे नयापन लाने की कोशिश करती दिखाई देती हैं।
4. पद्माशा की कहानियों में स्वावलंबी नारी जीवन का चित्रण अत्यल्प मात्र में दिखाई देता है।
- सानिया की कहानियों में पर्याप्त मात्रा में दिखाई देता है।

परावलंबी नारी :

समाज में उच्चवर्गीय नारी जीवन आर्थिक दृष्टि से संपन्न होता है। निम्नवर्गीय नारी मजबूरी के कारण स्वयंरोजगार करती हुई अपना जीवनयापन करती है किंतु मध्यमवर्गीय नारी न ही आर्थिक दृष्टि से संपन्न होती है और न स्वयं कमा सकती है। नौकरी करना हीन माना जाता है। अत: उन्हें परावलंबी जीवन बिताना पड़ता हैं। पद्माशा और सानिया की कहानियों में परावलंबी नारी दिखाई देती है।

पद्माशा की 'पीली कली गुलाब की' की मालिनी का पति विदेश में था। दोनों बच्चे होस्टेल में पढ़ाई के लिए थे। मोहिनी परावलंबी होने के कारण अकेली रहती थी। पति उच्चपदस्थ होकर भी मालिनी अकेलेपन के कारण परावलंबी जीवन बिताती दिखाई देती है।

'खानाबदोश रिश्तें' की सुजाता एक जानी मानी पत्रकार थी लेकिन वह भुवन के प्यार में अंधी होकर उसे उसके पहले पत्नी के बच्चों सहित अपनाती है। लेकिन जो भुवन उसके कैरिअर को बढ़ावा, हौसला देता था वही बाद में उसे घर में बिठाता है। इसीकारण सुजाता शादी के बाद एक परावलंबी जीवन बिताती दिखाई देती है।

'अनुपमा' की अनुपमा माता - पिता के लिए अपनी पढ़ाई अधूरी छोड़ उनके अनुसार शादी करती है। उसके शादी में बहुत सारा सामान और दहेज उसे माता - पिता कन्यादान में देते है। फिर भी उसके ससुरवालों कों यह कम ही लगता हैं। इसीलिए अनुपमा को वह बहुत सताते है। अनुपमा परावलंबी थी तो कुछ ना कर सकी। यहाँ अनुपमा सिर्फ परावलंबी होने के कारण ही उसपर यह स्थिति आती है, यह दिखाई देता है।

'गर्म बिस्तर' की नीमा एक प्रावलंबी नारी है। पहले पति के साथ रहती थी। पति उसे बहुत मारता था, गालियाँ देता था फिर भी वह परिवार को बचाने के लिए चुपचाप रहती थी। लेकिन एक दिन वह घर में दुसरी औरत ले आया और नीमा यह सह ना सकी। उसने झगड़ा करके इसका विरोध किया। लेकिन वही उसे घरसे बाहर निकालता है। नीमा परावलंबी होने के कारण पंडित का सहारा लेती है। यहाँ नीमा द्वारा परावलंबी जीवन बिताने वाली नारी चित्रित होती है।

सानिया की 'स्पर्श' की सुचित्रा एक घरेलु, परावलंबी नारी है। वह घर के सभी काम करती है फिर भी उसके लिए किसी के पास वक्त नहीं है। उसे क्या अच्छा लगता है, उसे क्या

पसंद है यह कोई नहीं देखता । लेकिन सुचित्रा सबका खयाल रखती है । यहाँ सुजाता द्वारा परावलंबी जीवन बिताने वाली नारी चित्रित होती है ।

'काजवे' की लीला परावलंबी जीवन बिताते दिखाई देती है । लीला बी.ए. है, फिर भी वह पति राघव के आगे कुछ नही कर पाती ।उसके माता - पिता की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण उसकी शादी उससे उम्र में कई ज्यादा राघव के साथ कर दी जाती है । राघव के विक्षिप्त स्वभाव के कारण उसे बहुत दुख झेलने पडते है फिर भी वह परावलंबी होने के कारण कुछ नहीं कर पाती ।

समन्वित तुलनात्मक अनुशीलन :

पद्‌माशा तथा सानिया की कहानियों के अध्ययन के पश्चात नारी के आर्थिक जीवन में परावलंबी जीवन बितानेवाली नारी चित्रित होती है ।दोनों की कहानियों में नारियों की पढ़ाई अधुरी रह जाने के कारण ही नारी परावलंबी जीवन बिताती चित्रित होती हैं ।

दोनों की कहानियों में नारियों के पति के द्वारा दुर्लक्षित होने के कारण नारी परावलंबी है । पद्‌माशा की कहानियों में परावलंबी नारी का चित्रण पर्याप्त मात्रा में दिखाई देता हैं । सानिया की कहानियों में अत्यल्प मात्रा में दिखाई देता हैं ।

विवेच्य कहानीकारों के कहानियों के अध्ययन के पश्चात परावलंबी नारी जीवन को लेकर जों साम्य - विषम्य द्रष्टव्य होता हैं, वे इस प्रकार हैं -

साम्य :

1. पद्‌माशा तथा सानिया की कहानियों में नारी के आर्थिक जीवन में परावलंबी नारी जीवन दिखाई देता है ।
2. दोनों कहानियों में नारियों के पति द्वारा दुर्लक्षित होने के कारण नारी परावलंबी जीवन बिताती दिखाई देती है ।

वैषम्य :

1. पद्‌माशा की कहानियों में परावलंबी नारी जीवन का चित्रण पर्याप्त मात्रा में हुआ है ।
- सानिया के कहानियों में परावलंबी नारी का चित्रण अत्यल्प मात्रा में हुआ है ।
2. पद्‌माशा की कहानियों में परावलंबी नारी पर अत्याचार किया गया है ।
- सानिया की कहानियों में ऐसा चित्रण नहीं दिखाई देता है ।

समन्वित तुलनात्मक अनुशीलन :

पद्माशा तथा सानिया के कहानियों की अध्ययन के पश्चात 'विवेच्य कहानियों में प्रतिबिंबित नारी जीवन में जों साम्य वैषम्य निष्कर्ष रुप में परिलक्षित हुए हैं, वे इस प्रकार हैं -

विवेच्य कहानीकारों की कहानियों के अध्ययन के पश्चात यह दिखाई देता हैं कि दोनों की कहानियों में सफल दांपत्य जीवन का चित्रण हुआ है। पद्माशा तथा सानिया की कहानियों की नारी अपने परिवार की सफलता के लिए अपना कैरिअर छोड़ते दिखाई देती है। पति भी अपनी पत्नी की सफलता के लिए सम्झौता करते चित्रित होती है।

पद्माशा की कहानियों में सफल दांपत्य जीवन का चित्रण अत्यल्प मात्रा में दिखाई देता है। सानिया के कहानियों में पर्याप्त मात्रा में परिलक्षित होता हैं।

दोनों की कहानियों में 'असफल दांपत्य जीवन' का चित्रण दृष्टिगोचर होता हैं। दोनों की कहानियों मे पति द्वारा शादी जैसे बंधन को ठुकराकर हालात से भागने का चित्रण दिखाई देता हैं। दोनों की कहानियों मे नारी का प्रेमविवाह होने के बावजूद भी वह असल जिंदगी में असफल दांपत्य जीवन का सामना करती चित्रित होती हैं। दोनों की कहानियों की नारियाँ आत्मनिर्भर दिखाई देती हँ। सानिया की कहानियों की नारी असफल दांपत्य जीवन का सहनता से स्वीकार करती दिखाई देती है लेकिन पद्माशा की कहानियों की नारी दिल से कमजोर चित्रित होती हैं।

दोनों की कहानियों में शोषित तथा पीड़ित नारी जीवन का चित्रण द्रष्टव्य होता है। दोनों की कहानियों की नारी शोषित तथा पीड़ित जीवन बिताती चित्रित होती हैं। दोनें की कहानियों की नारी बचपन से लेकर किसी ना किसी से शोषित तथा पीड़ित जीवन बिताती चित्रित होती हैं। पद्माशा की कहानियों की नारी परिवार के लिए शोषित जीवन बिताती दिखाई देती है। सानिया की कहानियों की नारी खुद की स्वतंत्रता के लिए शोषित जीवन बिताती चित्रित होती है।

दोनों की कहानियों में कर्मट तथा कठोर नारी जीवन चित्रित मिलता है। दोनों की कहानियों में नारी अन्याय के कारण कर्मठ तथा कठोर जीवन बिताती चित्रित होती है। दोनों की कहानियों में नारी अपने स्वार्थ के लिए प्रसंगावश परिवार को भी नहीं छोड़ती है। दोनों की कहानियों में नारी स्वभाव से भी कर्मट दिखाई देती है। पद्माशा की कहानियों की नारी प्यार में धोखा खाने पर कर्मठ तथा कठोर जीवन बिताती दिखाई देती है। सानिया की कहानियों की नारी स्वभाव के खिलाफ कर्मठ तथा कठोर जीवन बिताती चित्रित होती है।

दोनों की कहानियों की नारी के सामाजिक जीवन में नारी को विवश तथा घृणित जीवन बिताना पड़ता है, यह द्रष्टव्य होता है। दोनों की कहानियों की नारियाँ मानसिक पीड़न का विरोध करने की क्षमता होते हुए भी स्वयं को शक्तिहीन समझकर विवश तथा घृणित जीवन बिताती दिखाई देती हैं।दोनों की कहानियों की नारियाँ अपने चरित्र के लिए नारी मजबूरी में विवश तथा घृणित जीवन बिताती चित्रित होती हैं। सानिया के कहानियों की नारी समाज की द्रष्टी से गलत बातों के लिए विवश तथा घृणित जीवन बिताती दिखाई देती है।

दोनों की कहानियों में नारी के सामाजिक जीवन में नारी का जागृत जीवन भी दृष्टिगोचर होता हैं। दोनों की कहानियों में नारी अन्याय के खिलाफ जागृत होकर जीवन बिताती चित्रित होती है। दोनों के कहानियों में नारी अन्याय को सहकर जागृत होती दिखाई देती है।

दोनों की कहानियों की नारी परिवार वालों के द्वारा धन के प्रति लालच के कारण ही अकेली जागृत जीवन बिताती चित्रित होती है। पद्माशा की कहानियों की नारी अन्याय के खिलाफ विद्रोही जागृत जीवन बिताती चित्रित होती है। सानिया की कहानियों की नारी समझदारी से जागृत जीवन बिताती चित्रित होती है।

दोनों की कहानियों में नारी के आर्थिक जीवन में स्वावलंबी जीवन बितानेवाली नारी चित्रित मिलती है। दोनों की कहानियों की नारी परिवार की भलाई के लिए स्वावलंबी जीवन बिताती दिखाई देती हैं। दोनों की कहानियों की स्वावलंबी नारी विवाहित चित्रित होती हैं। पद्माशा की कहानियों की नारियाँ समाज में अपना आर्थिक स्तर बनाने के लिए स्वावलंबी बनी दिखाई देती हैं। सानिया कि कहानियों की नारियाँ खुद स्वावलंबी है जों जीवन में कुछ पाना चाहती हैं। पद्माशा की कहानियों की नारियों खुद की प्रेरणा ने स्वावलंबी बनती हैं। सानिया की कहानियों की नारियों दुसरी नारी को स्वावलंबी बनाती दिखाई देती हैं। तो ऐसा चित्रण पद्माशा की कहानियों में नहीं दिखाई देता।

दोनों की कहानियों की नारी के आर्थिक जीवन में परावलंबी जीवन बिताने वाली नारी चित्रित होती है। दोनों की कहानियों में नारियों की पढ़ाई आधी अधुरी रह जाने के कारण ही नारी परवलंबी जीवन बिताते चित्रित होती हैं। दोनों की कहानियों में नारियों के पति के द्वारा दुर्लक्षित होने के कारण नारी परवलंबी हैं। पद्माशा की कहानियों मे परावलंबी नारी का चित्रण पर्याप्त मात्रा में दिखाई देता है। सानिया की कहानियों में अत्यल्प मात्रा में दिखाई देता है।

विवेच्य कहानीकारों की कहानियों में नारी जीवन के अंतर्गत प्राप्त घटनाओं के चित्रण को लेकर जो साम्य - वैषम्य परिलक्षित होते हैं, वे इस प्रकार हैं।

साम्य :

1. पद्माशा तथा सानिया दोनों की कहानियों में दांपत्य जीवन के अंतर्गत सफल दांपत्य जीवन का चित्रण दिखाई देता है।
2. पद्माशा और सानिया दोनों की कहानियों मे दांपत्य जीवन में असफल दांपत्य जीवन का चित्रण दृष्टिगोचर होता है।
3. दोनों की कहानियों में नारी के पारिवारिक जीवन में शोषित तथा पीड़ित नारी जीवन का चित्रण परिलक्षित होता हैं।
4. पद्माशा तथा सानिया की कहानियों में नारी के पारिवारिक जीवन में कर्मठ तथा कठोर नारी जीवन का चित्रण दिखाई देता हैं।
5. पद्माशा तथा सानिया की कहानियों में नारी के सामाजिक जीवन में नारी को विवश तथा घृणित जीवन बिताना पड़ता हैं, यह दृष्टिगोचर होता है।
6. दोनों की कहानियों में नारी के सामाजिक जीवन में जागृत नारी का चित्रण द्रष्टव्य होता है।
7. पद्माशा तथा सानिया की कहानियों में नारी के आर्थिक जीवन में स्वावलंबी नारी जीवन चित्रित दिखाई देता हैं।
8. दोनों की कहानियों में नारी के आर्थिक जीवन में परावलंबी नारी जीवन दिखाई देता है।

वैषम्य :

1. पद्माशा की कहानियों में सफल दांपत्य का चित्रण अत्यल्प मात्रा में दिखाई देता है।
- सानिया की कहानियों में पर्याप्त चित्रण दर्शित होता है।

2. सानिया की कहानियों की नारी पति के लिए माता पिता का त्याग करती चित्रित होती है।
- पद्माशा की कहानियों में ऐसा चित्रण ही नहीं है।

3. सानिया की कहानियों की नारी असफल दांपत्य जीवन का सहजता से स्वीकार करती दिखाई देती है।

- पद्माशा की कहानियों की नारी दिल से कमजोर दिखाई देती है।

4. पद्माशा की कहानियों में निम्न वर्ग की नारी अपने मालिक द्वारा शोषित तथा पीड़ित दिखाई देती है।

- ऐसा चित्रण सानिया की कहानियों में नहीं है।

5. पद्माशा की कहानियों में बच्चे के लिए माँ शोषित तथा पीड़ित जीवन बिताती चित्रित होती है।

- सानिया की कहानियों में माँ के कारण बेटी शोषित तथा पीड़ित जीवन बिताती चित्रित होती हैं।

6. पद्माशा की कहानियों की नारी परिस्थितिवश कर्मठ तथा कठोर दिखाई देती है।

- सानिया की कहानियों की नारी स्वभाव से ही कर्मठ तथा कठोर दिखाई देती है।

7. पद्माशा की कहानियों में नारी के कर्मठ स्वभाव के कारण दुसरी नारी की जान स्वार्थ हेतु जाती है, ऐसा चित्रण मिलता है।

- सानिया की कहानियों में ऐसा चित्रण नहीं मिलता।

8. पद्माशा की कहानियों की नारी मजबुरी में विवश तथा घृणित जीवन बिताती चित्रित होती है।

- सानिया की कहानियों की नारी समाज द्वारा बनाए गए नियमों का उल्लंघन करने के कारण विवश तथा घृणित नारी जीवन बिताती चित्रित होती है।

9. पद्माशा की कहानियों की नारी आर्थिक दृष्टि से सक्षम ना होने के कारण विवश तथा घृणित जीवन बिताने पर मजबूर होती है।

- सानिया की कहानियों की नारी आर्थिक स्तर से सक्षम होकर भी पारिवारिक साथ ना मिलने के कारण विवश तथा घृणित नारी जीवन बिताती है।

10. पद्माशा की कहानियों की नारी स्वभाव से भावुक होने के कारण विवश तथा घृणित जीवन बिताती चित्रित होती हैं।

- सानिया की कहानियों की नारी स्वभाव से स्वच्छंदी होने के कारण विवश तथा घृणित जीवन बिताते चित्रित होती है।

11. पद्माशा की कहानियों की नारी अन्याय के खिलाफ विद्रोही जागृत जीवन बिताती चित्रित होती है।

- सानिया की कहानियों की नारी समझदारी से जागृत जीवन बिताती चित्रित होती है।

12. पद्माशा की कहानियों की नारी अन्याय के खिलाफ जागृत होती है, लेकिन समाज के नियमों को तोडती दिखाई देती है।

13. पद्माशा की कहानियों की नारियों को आर्थिक मजबूरी ने स्वावलंबी बनाया है, यह द्रष्टव्य होता हैं।

- सानिया की कहानियों की नारियाँ अंतरिक प्रेरणा से स्वावलंबी बनी दिखाई देती हैं।

14 सानिया की कहानियों की एक नारी दुसरी नारी को स्वावलंबी बनाती द्रष्टव्य होती है।

- ऐसा चित्रण पद्माशा की कहानियों में नहीं दिखाई देता ।

15 पद्माशा की कहानियों की नारियाँ समाज में अपना आर्थिक स्तर बनाये रखने के लिए स्वावलंबी बनी चित्रित होती है

- सानिया की कहानियोंकी नारियाँ जो खुद स्वावलंबी हैं, जो जीवन में नयापन लाने की कोशिश करती दिखाई देती है।

16. पद्माशा की कहानियों में स्वावलंबी नारी जीवन का चित्रण अल्प मात्रा में दिखाई देता है।

- सानिया की कहानियों में पर्याप्त मात्रा में दिखाई देता है।

17. पद्माशा की कहानियों में परावलंबी नारी जीवन का चित्रण पर्याप्त मात्रा में हुआ है।

- सानिया के कहानियों में परावलंबी नारी का चित्रण अत्यल्प मात्रा में हुआ है।

18. पद्माशा की कहानियों में परावलंबी नारी पर अन्याय किया गया है, ऐसा चित्रण मिलता है।

- सानिया की कहानियों में ऐसा चित्रण नहीं दिखाई देता।

****